हज़रत मौलाना शाह

अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी

रह0

1850 ई0 से 29 जनवरी 1919 ई0

लेखक

प्रोफेसर मुहम्मद सुलेमान

प्रकाशक

जामियातुश्शेख़ हुसैन अहमद मदनी

ख़ानकाह, देवबन्द–247554 सहारनपुर उत्तर प्रदेश

©

जुमला हक़ूक़ लेखक के सुरक्षित हैं

विवरण

नाम किताबः— शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी रह0

लेखकः— प्रोफेसर मुहम्मद सुलैमान

प्रोत्साहनः— मौलाना ज़रीफ़ अहमद कासमी नदवी

सन् प्रकाशनः— 2007 ई0

प्रकाशकः— जामियातुश्शेख़ हुसैन अहमद मदनी

ख़ानकाह, देवबन्द—247554

सहारनपुर उत्तर प्रदेश

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रह0 के विशेष ख़लीफ़ा और उत्तराधिकारी हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर साहब रह0 लेखक को एक बार बेहट हाउस सहारनपुर में आपसे मिलने और दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त है।

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रह0 के अंतरंग ख़लीफ़ा, हज़रत मिस्त्री अहमद हसन साहब रह0 सीमेन्ट रोड़ देहरादून। साथ में खड़े हैं लेखक प्रो0 सुलेममान।

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रह0 के जीवन के सम्बन्ध में अधिकतर सामग्री आप से ही हमें प्राप्त हुई हम इनके ऋणि और आभारी हैं।

हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी रह0

1850 ई0 से 29 जनवरी 1919 ई0

उत्तर प्रदेश प्रसिद्ध औद्योगिक शहर सहारनपुर से एक पक्की सड़क कस्बा बेहट से होकर उत्तर की ओर चकरौता तक चली गई है। बताया जाता है कि यह सड़क अशोक सम्राट के समय से है जिसके द्वारा बुद्ध भिक्षु तिब्बत और चीन तक जाया करते थे। इसी प्रमाण के लिए कालसी में आज भी अशोक का शिलालेख है। इस चकरौता रोड़ पर गन्देवड़ नाम से बेहट कस्बे से 3 कि.मी. उत्तर में एक गांव है। जहां पूर्वी यमुना नहर का पुल है। बस यही पूर्वी यमुना नहर के बाएं किनारे के साथ पक्की सड़क बना दी गई है और यही सड़क रायपुर, नाम के कस्बे को जाती है जो गंदेवड़ से लगभग पांच या छः कि.मी. उत्तर में है। कस्बा रायपुर मुसलमान राजपूतों का एक पुराना जमींदारों की आबादी वाला कस्बा है।

कस्बे से पश्चिम की ओर नहर के पार बागों के झुरमुट में भारतीय ऋषि मुनियों की भांति एक आश्रम बना है, ऐसे आश्रमों को जिन्हें मुसलमान संत आबाद करते या बनाते हैं 'खानक़ाह' कहा जाता है। रायपुर के इस आश्रमनुमा खानकाह को हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब ने अपने लिए अल्लाह की उपासना हेतु बनाया था। अधिकतर ऐसी खानकाहों के नाम उनके आबाद करने वालों के नाम पर रखे जाते हैं इसलिए इस खानकाह का नाम हज़रत शाह अब्दुर्रहीम रह0 के नाम पर गुलज़ार रहीमी रखा गया है।

खानकाह गुलज़ार रहीमी क्या केवल एक संत का आश्रम ही है या कुछ ओर भी ? इस प्रश्न का जब हम उत्तर तलाश करते है तो पता

चलता है कि पर्दे के पीछे बहुत बड़ा सामाजिक, शैक्षिक, आध्यात्मिक और राजनीतिक राज और इतिहास छिपा है। विदेशी सरकार की गुलामी से छुटकारा पाने के लिए स्वतंत्रता जैसे संघर्ष का यह बड़ा केन्द्र रहा है। हमने प्रस्तुत पुस्तक में इसी प्रश्न के उत्तार को खोजने का प्रयत्न किया है।

इससे पूर्व कि इतिहास के पन्नों को पलटा जाय, खानकाह के संस्थापक हजरत शाह अब्दुर्रहीम साहब के संबंध में जानकारी की जाए क्योंकि स्वतंत्रता संग्राम के पूर्ण रूप से रायपुर में वही नायक रहे हैं। इस कारण यह जानना कि शाह अब्दुर्रहीम साहब कौन थे? कहां से आए थे? यहां कब आये थे? क्यों आये थे? आदि प्रश्नों का उत्तर जान लेना आवश्यक है।

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रह0

वास्तविकता यह कि खानकाह गुलज़ार रहीमी का इतिहास जितना गुप्त रहा है उतनी ही पौशीदा तारीख हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब की है। हजरत साहब के इतिहास को खोज निकालना ही इस खानकाह के इतिहास की खोज निकालना है हजरत शाह अब्दुर्रहीम साहब के बचपन के हालात बिल्कुल खामोश है जानकारी सूत्रों से अभी तक इतना पता चला है कि हजरत शाह अब्दुर्रहीम साहब की वास्तविता गाँव तिगरी था जो हरियाणा प्रान्त में स्थित है। वहीं आप एक बड़े ज़मीदार घराने में पैदा हुए थे। आप के पिता का नाम राव अशरफ अली था।1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शामली युद्ध के अंदर विफल हो जाने के पश्चात 1858 ई0. में हजरत मौलाना रशीद अहमद गंगोही जब अपने गुरू ओर शामली युद्ध का नेतृत्व करने वाले हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहब की तलाश में तिगरी पहुंचे तो हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब केवल तीन वर्ष के छोटे बच्चे थे। इस घटना से पता चलता है कि आप का जन्म 1855 ई0 में हुआ है हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब के पिता भी हज़रत

गंगोही के साथ पंजलाशा जाकर हाजी इम्दादुल्लाह साहब से मिले थे। बाद में हाजी साहब मक्का चले गये थे और आजीवन वहीं रहे।

शिक्षा

हज़रत शाह अब्दुलर्रहीम साहब की आरम्भिक शिक्षा गांव के मुल्ला जी से हुई। कुरान शरीफ उर्दू और कुछ फारसी भी गांव ही में पढ़ ली थी। इसके पश्चात् आपने अरबी, फारसी और इस्लाम धर्म की शिक्षा सहारनपुर के अरबी मदरसा मजाहर उलूम में प्राप्त की ।

संत मियां अब्दुर्रहीम साहब से संपर्क

इस्लाम धर्म की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् किसी दक्ष आत्मज्ञानी से दीक्षा प्राप्त करना भी अनिवार्य माना जाता है। इसके लिए मनुष्य किसी आत्मज्ञानी को तलाश करता है और उसको अपना पीर बनाकर उसके बताए हुए मार्ग पर आत्म शुद्धि के लिए साधना करता है। जिन दिनों आप मजाहिर उलूम में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, आपका संपर्क मियां अब्दुर्रहीम साहब से हो गया। यह मियां अब्दुर्रहीम साहब सीमा प्रांत के एक व्यक्ति से मुरीद थे। जिनको अखुंद साहब कहतें थे। यह अखुंद साहब मुजाहिद क्रांतिकारी थे जो अंग्रेजों के सख्त ख़िलाफ़ थे। मियां अब्दुर्रहीम साहब जब अपने पीर अखुंद साहब से मुरीद हो गये तो उस समय अंग्रेजों की नौकरी करते थे। अखुंद साहब ने सबसे पहले मियां अब्दुर्रहीम साहब से अंग्रेजों की नौकरी छुड़वाई इसके बाद प्रण कराया कि कभी अंग्रेजों की नौकरी नही करेंगे।

मुरीद होने के पश्चात् जब वापस आये तो जीवन निर्वाह के लिए नौकरी की आवश्यकता पड़ी तो कहीं न मिली फिर तंग आकर

अंग्रेजों के यहां नौकरी कर ली। इसके बाद कुछ समय बीतने पर आप अपने पीर साहब से मिलने गए। जब उनको पता चला कि आपने अंग्रेजों की नौकरी कर ली तो बहुत नाराज़ हुए और कहां अब तुम्हारी बैत (प्रतिज्ञा) टूट गई,इस बात को सुन कर आप बहुत रोए और पीर साहब से माफी मांगी। इस पर आपको माफ करके फिर मुरीद बना लिया और कुछ महीन अपने पास रखा जब आपका मन साफ हो गया तो वापस सहारनपुर भेजा।

हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब को मियां अब्दुर्रहीम साहब सहारनपुरी ने अंग्रेजों कें विरूद्ध कार्य करने के लिए ही मुरीद बनाया था। मियां अब्दुर्रहीम साहब का मज़ार सहारनपुर से सरसावा जाने वाली सड़क पर सहारनपुर में सरसावा चुंगी के पास है। उनको मियां अब्दुर्रहीम इसलिए कहा जाता था कि बात करते समय वह बात–बात में मियों शब्द का प्रयोग करते थे। इसलिए उनका नाम मियां पड़ गया,जबकि असली नाम अब्दुर्रहीम था।

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब का रायपुर पहुंचना

हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब का ननिहाल और ददिहाल रायपुर गांव में ही था इस कारण अपनी पढ़ाई के समय से ही आप वहां आया जाया करते थे,लेकिन शिक्षा प्राप्ति के पश्चात् जब आपने अपने गुरू मियां अब्दुर्रहीम से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर ली तो उनके आदेशानुसार आप रायपुर कस्बें की ओर चले गए। सबसे पहले आपने रायपुर कस्बे के पास ही आलमपुर नामक गांव के बांग मे एक झोपड़ी ड़ाली जहां आपके पास क्षेत्र के गरीब लोग आते और खूब घुल–मिल कर आपसे मिलते और बाते करते थे।

यह रिआया और जमींदार का समय था। रायपुर के राव लोग बड़े जमींदार थे उनको यह बात पसंद नही आयी कि उनके रिश्तेदार गरीबों के बीच में रहें और वे लोग बिना तकल्लुफ बातें करें। इसलिए गांव रायपुर के जमीदार जो आपके रिश्तेदार भी थे वह इसको तौहीन समझते थे। इस से वे उनको वहां जंगल से उठाकर गांव की जमा मस्जिद में ले आये और एक अच्छा कमरा मस्जिद में रहने को दे दिया। कुछ दिन तो आप वहां रहे लेकिन यह रहना आपको कैद से भी बुरा लगता था। आपकी तबीयत वहां बिल्कुल भी नहीं लगी। तबीयत न लगने का कारण यह था,कि साधारण, गरीब आदमी आपसे नहीं मिल सकता था, जिनसे उनको दिली लगाव था। जब गांव वालों ने देखा कि आप ग़म ज़दा रहते हैं तो आपके लिए गांव के पश्चिम की ओर नहर के दाए किनारे पर बाग में एक स्थान बना दिया जहां पर फूंस का एक बंगला तैयार किया गया और आप उसमें रहने लगे।

आप एकांतप्रिय थे, आरंभ से ही आपको पक्के मकानों से घृणा सी थी । आपने खानकाह मे पक्का मकान बनाने की कभी अनुमति नहीं दी। परन्तु फिर भी खानकाह में एक पक्की कोठी है इसके संबंध में हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान रायपुरी नौ मुस्लिम और उनके खलीफा मिस्त्री अहमद हसन साहब ने मुझे बतलाया।

''यह जो कोठी तुम देख रहे हो यह एक बहुत बड़े ठेकेदार जिसने कालका से शिमला जाने वाली रेलवे लाईन बनाई थी उसने हज़रत की गैरहाजरी में बनवा दी थी। कोठी तैयार करने का भी अजीब इत्तिफाक है। हजरत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब कुछ दिनों के लिए रियासत मैंडू में चले गए। उन दिनों उस ठेकेदार ने अपनी तमाम मदद और श्रमिक उधर लगा कर कुछ ही दिनों में इस कोठी

को तैयार करा दिया। जब हज़रत मैंडू से तशरीफ लाए तो देखा एक हवेली बनी खड़ी है।''

मिस्त्री अहमद हसन साहब हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब जनता में से एक खलीफा थे, आप मिर्जापुर पोल के रहने वाले थे लेकिन बाद में सीमेंट रोड देहरादून मे जाकर बस गये थे। मैं उनसे हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान रायपुरी के साथ मिला। चूंकि हज़रत शाह मौलाना अब्दुर्रहीम साहब की कोई जीवनी नहीं है इसलिए उनके जीवन के संबंधों में कुछ कहना कठिन हैं मिस्त्री अहमद हसन साहब उनके अंतरंग खलीफ़ा थे इसलिए मुझे उनके द्वारा जो कुछ मिला उसको यहां दे रहा हूं। मिस्त्री शब्द का जहां कहीं भी इस लेख में वर्णन है उस्से तात्पर्य हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी के खलीफा हज़रत मिस्त्री अहमद हसन साहब से है।

हाजी इमदादुल्ला साहब रह0 से मुलाकात

शिक्षा प्राप्ति के पश्चात जब रायपुर खानकाह में रहने लगे तो आपके मन में हज करने की इच्छा जागी। जब हज की तैयारी कर ली तो आप ने अपने पीर मियां अब्दुर्रहीम से मिलने सहारनपुर गए। स्व. मिस्त्री जी का कहना है।

''जब आप पीर साहब से मिलने सहारनपुर गए तो उन्होंने फरमायाः''मेरे चांद इस जहाज से हज करने के लिए मत जाना।'' लोगों ने चले जाने को कहा लेकिन आपने अपने पीर का कहना माना और नहीं गए। अगला जहाज दो सप्ताह बाद जाना था आपके पीर ने उसमें जाने की अनुमति दे दी। आप जब जद्दा जाकर उतरे तो पता चला कि पहला जहाज अभी तक नहीं आया है इनके जाने के

एक सप्ताह बाद पता चला कि पहला जहाज वहां पहुंचा। जहाज के यात्रियों ने बतलाया कि वे कई बार तुफान में फंस गए थे एक बार तो जहाज डूबने से बच गया। आपने अच्छा किया था कि आप इस जहाज से नहीं आए।

1857 ई. के प्रथम स्वतंत्रता सयग्राम के समय शामली के मैदान में जब मुस्लिम क्रांतिकारी अंग्रेजों के मुकाबले में हार गए तो दूसरे क्रांतिकारियों के साथ साथ हाजी इमदादुल्ला साहब जो शामली युद्ध के संयोजक थे का भी वारंट गिरफ्तारी जारी हो गया। उस समय हाजी इमदादुल्ला साहब रुपोश होकर अंग्रेजों से बचते बचाते अरब देश के मक्का शहर में पहुंच गए और यहीं स्थाई रुप से रहने लगे। अब कोई भी देशभक्त मुसलमान जब भारत से अरब हज करने जाता था तो अपने नेता हाजी इमदादुल्ला साहब से मिलने को अपना सौभाग्य समझता। जब हजरत शाह अब्दुर्रहीम साहब मक्का शहर में पहुंचे तो सबसे पहले वह हजरत हाजी इमदादुल्ला साहब की खिदमत में गए। उनसे क्रांतिकारी की दीक्षा ली फिर हज करके खैरियत से स्वदेश लौट आए।

भारत में क्रांतिकारीयों से संबंध

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब को पिरान कलयर जाने का बड़ा शौक था। वहां जाकर आप काफी काफी दिनों तक ठहरा करते थे। मिस्त्री अहमद हसन साहब एक घटना का वर्णन इस प्रकार करते हैं।

एक दिन हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब आपने अपने पीर साहब के पास जाने का इरादा किया। उनके पीर ने दो रोटी घर से नमक डालकर पकवाकर दे दी और चौदह आने के पैसे भी दिए। आपने

रोटी ले ली और 14 आने के पैसे भी संभाले और चल दिए कलयर शरीफ। उस समय चौदह आने सहारनपुर से कलयर का मोटर से आने जाने का किराया था। कलयर शरीफ जाकर वहां आप एक रात ठहरे। अगले दिन आपकी तबीयत बड़ी बेचैन हो गई। तुरंत पीर साहब के पास लौट चलने की बात सोची और चल दिए जब सहारनपुर आए तो देखते क्या हैं कि पीर साहब की मृत्यु हो गई है और जनाजा तैयार है। सदमे का जो पहाड़ आप पर टूटा उसका अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। टूटे दिल से आपने पीर को मिट्टी के हवाले किया।

इसी संबंध में मौलाना हबीबुर्रहमान रायपुरी फरमाते हैं "जब हज़रत रायपुरी पिरान कलयर में थे तो आपको ख्वाब आया कि आप मौलाना रशीद अहमद गंगोही से बैत (मुरीद) हो जाए आप बहुत घबराए कि जब एक पीर जीवित है तो दूसरे को कैसे पीर बना लें? इसी चिंता में आप पिरान कनयर से सहारनपुर तशरीफ लाए तो देखा कि आपके पीर साहब का इंतकाल हो गया है और जनाजा तैयार है।

जब आपके सहरनपुर के पीर साहब का इंतकाल हो गया तो अब आपने हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही को अपना पीर बनाया। हज़रत गंगोही ने आपको ख़िलाफत भी इनायत की। अब आपका आना जाना हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही के दरबार में हो गया।

हज़रत हाजी इमदादुल्ला साहब के अरब चले जाने के पश्चात उनके कार्य को मौलाना कासिम नानौतवी देख रहे थे। इसके पश्चात जब हज़रत नानौतवी का इंतकाल हो गया तो हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही इस क्रांति के जिम्मेदार बनाए गए। रशीद अहमद अब

पूरे भारत के मुस्लिम क्रांतिकारियों के जिम्मेदार थे। विदेशों से भी कुछ लोग आकर आपसे मिलते थे। शाह अब्दुर्रहीम साहब भी उनसे मिलते थे। हज़रत गंगोही की मृत्यु के पश्चात इस क्रांति के कर्ता धर्ता शेखुल हिंद हज़रत मौलाना महमूद साहब बने। जिस व्यक्ति का शाह अब्दुर्रहीम साहब पर गहरा प्रभाव पड़ा वह हज़रत शेखुल हिंद साहब थे तथा हज़रत शेखुल हिंद जिस पर अटूट विश्वास करते थे और जिनसे दिली मशवरा करते थे वह हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी थे। इस प्रकार हज़रत गंगोही और शेखुल हिंद के संपर्क में आने से मुस्लिम क्रांतिकारियों से पुर्ण रूप से जुड़ गए।

भरत में क्रांति का संगठन

कोई भी जन क्रांति उस समय तक सफलता और शक्ति प्राप्त नहीं कर सकती जब तक उसकी जड़ों को ग़रीब जनता के खून से न सींचा जाए। एक क्रांतिकारी कितने ही बढ़िया कार्य करने का बीड़ा उठाये लेकिन उसको जनता समर्थन लेना पड़ेगा।इस समर्थन को प्राप्त करने के लिए आपने गरीब जनता को अपने समीप लाने का प्रयत्न किया। दूसरी वस्तु जो क्रांति को चलाने के लिए होती है धन है।

तीसरी बात विश्वास पात्र क्रांतिकारी साथी। धन और प्रचार का काम हज़रत ने अपने हाथ में लिया, क्रांतिकारी, मुजाहिद और विश्वास पात्र साथी तलाश करना हज़रत शेखुल हिंद को सौंपा जिन्होंने यह कार्य दारूल उलूम देवबंद के माध्यम से किया।

प्रचार का कार्यक्रम

हज़रत रायपुरी के पास आसपास गांवों के लोगों के आने का तांता लगा रहता था और हज़रत भी दूर–दूर तक गांवों और शहरों में जाया करते थे। जहां भी आप जाते थे वहीं एक मदरसा चालू कर देते थे। वहां के प्रभावपूर्ण मुसलमानों को उसका प्रबंधक बना देते थे। सभी गांव या मुहल्ले वाले उस मदरसे को चलाने के जिम्मेदार बन जाते थे जिससे वह मदरसा उनकी क्रांति का एक छोटा सा यूनिट बन जाता था। इस प्रकार धर्म के नाम के साथ उनकी क्रांति का भी प्रचार होता था।

धन का इकट्ठा करना

जितना प्रभव आपका निर्धनों पर था उतना ही धनी लोगों पर भी था। जमींदार,राजा और नवाब आपके इशारे को समझते थे। आप लोगों से चंदा कह कर रूपया नहीं मांगते थे बल्कि लोगों से अपनी जरूरत की बात कह देते थे।उसको सुनकर ही लोग रूपए देने आरंभ कर देते थे। हज़रत मिस्त्री अहमद हसन साहब ने बतलाया,

"जब जंगे बलकान आरंभ हो गया और डाक्टर अंसारी तथा दूसरे केंद्रीय नेताओं ने चंदे की मांग की तो हज़रत रायपुरी ने ईद के दिन लोगों से चंदे के लिए कहा तो एक ही दिन में 2500 रूपए चंदा हो गया उस समय चंदे की इतनी बड़ी रकम एक रिकार्ड थी।"

यह तो थी चंदे की रकम की बात, जो आप अमीरों से लेते थे। दूसरी बात जो आप करते थे वह यह थी कि जो मदरसे आप खोलते थे उनमें आप एक क्रांतिकारी मेम्बर भेजते थे जो आपका विश्वासपात्र व्यक्ति होता था। उस अध्यापक का रहने खाने का भार वहां के अमीर लोगों पर होता था वही इसकी तनखा आदि देते थे। जो अध्यापक

वहां मदरसे में पढ़ाया करता था देखने में वह एक मुल्ला होता था परंतु होता था देश का एक क्रांतिकारी मुजाहिद। वह बच्चों को पढ़ाने के साथ अंग्रेजों के विरूध्द प्रचार का काम भी करता था।

ये छोटे बड़े अरबी मदरसे हज़रत रायपुरी ने कलकत्ते से लेकर काबुल तक और मद्रास से लेकर क्रांची और बिलोचिस्तान तक फैला रखे थे। ये सब क्रांति के अड्डे थे। जबकि अंग्रेज़ इनको मुल्लाओं के मकतब ही समझता रहा था। इन सब मदरसों का बड़ा मदरसा दारूल उलूम देवबंद था जो अंतर्राष्ट्रीय क्रांति का अड्डा था।

क्रांति के षड्यंत्र के लिए गुप्त रूप से इन्हें धन की काफी आवश्यकता होती थी। गुप्त धन गुप्त विधि से प्राप्त होता है। हज़रत के पास भी गुप्त रूप से धन आता था जिस का हिसाब–किताब नहीं रखा जाता था। हज़रत को इन मदरसों के कारण

इतनी सफलता मिली कि कोई व्यक्ति यदि दिल्ली में बैठ कर इन मदरसों की डोर को हिलावे तो पूरे भारत का जाल हिल जाए तथा इस जाल में जो भी फंस जाए वह फिर निकल न सके।

क्रांति क्या थी ?

शाह वली उल्लाह साहब ने शाहों के खिलाफ प्रजातांत्रिक रूप का एक विचार दिया था। 1857 ई. में उसके लिए एक देशव्यापी स्वतंत्रता संग्राम लड़ा गया था, दुर्भाग्यवश अंग्रेजों ने हमारी आजादी को छीन लिया था। इसी खोई हुई आजादी को प्राप्त करने और अंग्रेज़ों को देश से बाहर निकालने की सशस्त्र योजना क्रांति भरा कार्य था, जिसकी भुजाएं आसाम से लेकर अफगानिस्तान और नेपाल से लेकर तुर्की तक फैली हुई थी।

क्रांति की रूपरेख क्या थी ?

इस योजना के क्रांतिकारी शक्ति में विश्वास रखते थे, इसलिए सशस्त्र आंदोलन इनका मुख्य उद्देश्य था। अंग्रेजी सैना से युद्ध करके उनसे अपनी खोई हुई आज़ादी प्राप्त करना था। फौज कैसे कैसे तैयार की जाए ? भारत में तो अंग्रेज राज्य है करें तो क्या करें। इस बात से बचने के लिए इन लोगों ने यह योजना बनाई कि भारत से बाहर मुस्लिम हुकूमतों तथा अंग्रेज़ों के खिलाफ जो दूसरी सरकारें हैं उनसे फौजी सहायता लेकर अफगानिस्तान के मार्ग से भारत पर आक्रमण किया जाए। जब भारत पर अंग्रेजों के खिलाफ मित्र देशों की सैनाऐं आक्रमण करें तो देश की जनता उन फौजों का स्वागत करेगी और अंग्रेजों के खिलाफ बगावत कर देगी। इस प्रकार अंग्रेजों को शक्ति हीन बनाकर शक्ति द्वारा देश से बाहर निकाल देगी। इसी क्रांति के लिए ये क्रांतिकारी तैयारियां कर रहे थे।

क्रांति का आरम्भ

दारूल उलूम देवबन्द जो लगभग आरम्भ से ही क्रांतिकारी तैयार करने का मजबूत कारखाना था और हज़रत रायपुरी के समय तक अपने पचास वर्ष पूरे कर चुका था। इस मुद्दत में हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब और दूसरे अध्यापकों ने हजारों कांतिकारी तैयार कर के सीमा प्रांत अफगानिस्तान, काबुल और अरब देशों को भेज दिए थे जो अपना कार्य कर रहे थे। इधर हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब ने कलकत्ता;दिल्ली; बम्बई, कराची; लाहौर; उत्तर प्रदेश और पंजाब तथा सीमावर्ती प्रांतों में मदरसों के रूप में क्रांति के अडडे खोल दिए थे जिससे पूरा षरत कंट्रोल में हो गया था सीमावर्ती प्रांत से हज़रत शेखुल हिंद मौलाना महमूद हसन के पास सूचनाएं आ

रही थी कि क्रांति को आरम्भ किया जाए। हज़रत इस कार्य के लिए कोई अवसर तलाश कर रहे थे जो उनके लिए लाभकारी हो। अचानक प्रथम महायुद्ध के घोर बादल संसार पर मंडराने लगे। बस इसी समय इन हज़रात ने अपना क्रांति का कार्य आरम्भ कर दिया।

प्रथम महायुद्ध और मुस्लिम क्रांतिकारी

जर्मनी ने अंग्रेजों के विरूद्ध मोर्चा खोल दिया। तुर्की जो अंग्रेज़ों के खिलाफ थी वह भी जर्मनी के साथ युद्ध में कूद पडी। तुर्की जो उस समय पूरे संसार के मुसलमानों का खलीफा था उसके युद्ध की घोषणा करते ही तमाम दुनिया के मुसलमान हिल गये तथा तुर्की की हमदर्दी में उठ खड़े हुए। भारत में मौलाना मुहम्मद अली, शौकत अली ने खिलाफत के समर्थन में कमेटियां अंग्रेजों के खिलाफ बनाई और गांव गांव और शहरों में घूम कर जोश भरे तराने गाये, उनकी गूंज आज भी आकाश मंडल में घूम रही है।

उस समय का वर्णन करते हुए मिस्त्री अहमद हसन साहब फरमाते हैं,

दुनिया की इस उथल पुथल के समय इन आजादी के परवानों ने समय की नज़ाकत को पहचाना और उस समय को उचित समझ कर अपनी अंतर्राष्ट्रीय योजना को अमली जामा पहनाने का मश्वरा किया। कुछ साथियों का विचार था कि हज़रत शेखुल हिंद को सीमा प्रांत से होते हुए अफगानिस्तान काबुल भेजा जाए । हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब इस बात से सहमत नहीं थे। आपका विचार था कि मौलाना महमूद की उम्र और कमजोर शरीर का तकाजा नहीं करते कि खूफिया तरीके पर ऊबड़ खाबड़ पहाड़ियों और जंगलों की संख्तियां बर्दाश्त करे।

आप ने सुझाव दिया ''काबुल में किसी नौजवान को भेजा जाए और हज़रत को आराम से अरब जाकर तुर्की और जर्मन वगैरा के लीडरों से मदद लेकर तुर्की के खलीफा से फौजी मदद के सहारे काबुल पहुंचा जाए। इस सुझाव को सभी ने पसंद किया। काबुल में मौलाना उबैदुल्ला सिंधी को भेजा गया। इस सुझाव को दुसरे सभी साथियों ने ठीक माना।

मौलाना हबीबुर्रहमान रायपुरी के कथनानानुसार,''जहां तक मेरी जानकारी है और मैंने बड़ो से सुना है कि पहले मौलाना अबुल कलाम आजाद इस योजना से इत्तिफाक नहीं करते थे उनका कहना था कि मुल्क ही मे रहकर आजादी के लिए काम किया जाए बाहर रहने से कोई फायदा नहीं है लेकिन बाद में उनको भी इस योजना को पसंद करना पडा।''

हज़रत मिस्त्री और मौलाना हबीबुर्रहमान रायपुरी ने मुझे बतलाया,

''जब मौलाना उबैदुल्लाह को काबुल भजने की बात आई तो रूप्ये की आवश्यकता पड़ी। हज़रत मौलाना शाह अबदुर्रहीम साहब रायपुरी ने कस्बा बेहट के रईस शाह जाहिद हसन साहब से और रायपुर के बड़े जमींदार चौधरी मुहम्मद सिद्दीक साहब से कुछ रूप्ये नक़द लेकर हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी को भिजवाया।''

हज़रत शेखुल हिंद का अरब जाने से पहले हज़रत रायपुरी से मिलना

हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह को काबुल के लिए भेज कर हज़रत शेखुल हिंद मौलाना महमूद हसन साहब ने अरब जाने कि पुर्ण तैयारी कर ली थी मिस्त्री अहमद हसन साहब का कथन है।

''अरब जाने से पहले हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब रायपुर तशरीफ लाए। दो दिन हज़रत के पास ठहरे। जब वहा से रूखसत होने लगे और नाले को पार कर रहे थे तो वहां से तीन चुल्लू पानी पिया और फिर यह दुआ मांगी,''ए खुदा–वन्दे करीम अपने मुल्क का यह शीरी पानी हमें फिर नसीब करना'' इस पर सबने कहा 'आमीन'।

आगे हज़रत मिस्त्री साहब कहते हैं–

वह वक्त भी देखने काबिल था हिंदुस्तान की दो हस्तियां जुदा होकर भी एक दुसरे से मज़बूती से जुड़ रही थी। हज़रत शेखुल हिंद को तो हिंदुस्तान का शीरी पानी दोबारा नसीब हो गया लेकिन हज़रत रायपुरी से मिलना नसीब ना हो सका जिसकी उनको बड़ी हसरत रही।

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी की हज़रत रायपुरी से मुलाकात

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी वैसे तो अपने पिता के साथ देश त्याग कर अरब चले गये थे लेकिन वहां से जब भी आते तो हज़रत रायपुरी की खिदमत में अवश्य उपस्थित होते। परंतु यहां उनकी जिस ऐतिहासिक मिलन का वर्णन हज़रत मदनी ने अपनी पुस्तक 'नकशे हयात जिल्द दोम पृष्ठ 203' पर इस प्रकार किया है।

''1912 ई. (1330 हि.) में मुझे हस्बवादा चंद महिंनो के लिए हिंदुस्तान हाजिर होना पड़ा तो रायपुर हाजिर होने की नौबत आई हज़रत मौलाना शाह अबदुर्रहीम साहब ने मुझसे फरमाया हज़रत शेखुल हिंद लोगो से बैते जिहाद लेते हैं यह तो बहुत खतरनाक अमर (कार्य) है। अंग्रेजो को पता चल गया तो दारूल उलूम की ईंट से ईंट बजा देंगे

और मुसलमानो का यह मरकजे इल्मी और दीनी उजाड़ दिया जाएगा।''

चूंकि मुझको इसकी कोई खबर नहीं थी मैंने लाइल्मी का इज़हार किया और यह अर्ज किया कि मैं खुद शेखुल हिंद से पूछूंगा। मैंने रायपुर से वापसी पर मैलाना अब्दुर्रहीम साहब का मकूला (वाक्य) जिक्र किया तो हज़रत शेखुल हिंद नें फरमाया।

''हज़रत मौलाना मुहम्मद कासिम नानौतवी मरहूम ने दुआ फरमाई थी कि पचास बरस तक यह दारूल उलूम कायम रहे। सो बहम्दुलिल्लाह पचास बरस गुजर चुके हैं और दारूल उलूम बहुस्नो खूबी अंजाम दे चुका है।

आगे हज़रत मदनी फरमाते हैं मैं इस जवाब को सुन कर दम बखुद हो गया और समझ गया कि जो वाकियात नकल किए जा रहे हैं वे सही हैं।'' इस घटना से यहां पाठको के मन में शंका उठ सकती है जो मेरे मन में भी उठी थी वह यह कि इस घटना से पहले हज़रत रायपुरी को भी क्रांति की योजना का पता नहीं था। और यदि था तो आपने हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी से ऐसे अनजान पन का प्रश्न क्यों किया?

हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान रायपुरी ने मेरी इस शंका का निवारण इस प्रकार किया; ''हज़रत रायपुरी को पूरी क्रांति का पता था। आप हज़रत शेखुल हिंद की स्कीमों को जानते थे। हज़रत रायपुरी या कोई भी क्रांतिकारी अपनी गुप्त स्कीम को किसी भी नए व्यक्ति के सामने नहीं रखता था जब तक दूसरा व्यक्ति इस बात का इच्छुक और मुतलाशी न हो। हज़रत रायपुरी ने हज़रत मदनी से अनजानेपन

का सवाल करके यह जानने का प्रयत्न किया कि देखें हज़रत मदनी भी इस योजना के जानकार हैं या नहीं? हज़रत मदनी को इस प्रश्न से एक इच्छा जागी जिससे उन्होंने हज़रत शेखुल हिंद से जानकारी की कि जिससे उनको यह लाभ हुआ कि यह भी इस तहरीक के हिमायती हो गए। यदि हज़रत रायपुरी ऐसा प्रश्न न करते तो न जाने आप कितने दिनों इस तहरीक से दूर रहते।

हज़रत शेखुल हिंद द्वारा हज़रत रायपुरी को अपना जांनशीन बनाना

हज़रत मिस्त्री अहमद हसन और हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान रायपुरी ने बतलाया ''जब हज़रत शेखुल हिंद अरब जाने लगे तो अपने तमाम दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, लाहौर आदि सभी मुरीदों को यह फरमा गए थे कि मेरे बाद मेरा कायम मुकाम हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी को समझना।''

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी साहब ने अपनी पुस्तक 'नकशे हयात' जिल्द दोम के पृष्ठ 204 पर लिखा है।

''जबकि ऐलाने जंग के बाद हज़रत शेखुल हिंद हिजाज़(अरब) जाने लगे तो इन्हीं को (रायपुरी) अपना कायम मुकाम बना गए और अपने कारकुनों को ताकीद कर दी कि मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब को मेरे कायम मुकाम समझना और मोहतमिम बिश्शान (बड़े कार्यों) उमुर को उनसे मश्वरा लेकर और पूछ कर अंजाम देना। हज़रत रायपुरी मरहूम निहायत दिल शोजी और इस्तकलाल आली हिम्मत से राजदारी के साथ उमूर मुहिमा को अंजाम देते रहे। इनके खुद्दाम दिलचस्पी लेते रहे मगर अफसोस हम मालटा में कैद हो गये और आप मरजुल मौत में।''

हज़रत रायपुरी की भारत में जिम्मेदारियां

जब हज़रत शेखुल हिंद अरब चले गए तो पूरे भारत की क्रांति की जिम्मोरी हज़रत रायपुरी के कंधों पर आन पड़ी थी। हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी अपनी पुस्तक नकशे हयात जिल्द दो में पृष्ठ 208 पर क्रांति के मरकजें के नामों में देवबन्द दीनपुर शरीफ, अमारोट शरीफ, करांची खंड, दिल्ली और चकवाल बताया है।

चूंकि मरकज रायपुर और देवबन्द सहारनपुर में एक ही माना जाता था इसलिए अलग नाम नहीं लिया। इन केंदों द्वारा हज़रत रायपुरी जो काम कर रहे थे वे मोटे रूप में निम्न प्रकार थे।

1. दारूल उलूम देवबन्द की पूरी जिम्मेदारी संभालना।

2. जनता में अंग्रेजों के ख़िलाफ बगावत का प्रचार करना।

3. भारतीय क्रांतिकारियों का मार्गदर्शन करना।

4. लोगों से चंदा लेकर सीमा प्रांत में क्रांतिकारियों के पास भेजना।

5. क्रांतिकारियों के परिवारों की खबरगीरी करना।

उपर्युक्त कार्यों को आपने जिस सावधानी और लगन से पूरा किया, इस बात का पता इससे चलता है कि आप पंजाब के एक गांव खानपुर में गए वहां प्रातः काल की नमाज पढ़कर मस्जिद के बाहर गेट को बंद कर दिया और लोगों से कहा प्रत्येक व्यक्ति को आज चन्दे में कोई न कोई जानवर देना होगा। जितने नमाज़ी थे उन्होंने अपनी शक्ति के मुताबिक एक एक जानवर आपको दिया। इन सब जानवरों का मूल्य उस समय सत्रह हजार था एक ही गांव से

इकट्ठा हुआ चन्दा जो सब आपने कुछ क्रांतिकारियों को भेज दिया कुछ उनके परिवारों में बांट दिया।

1975 ई0 मे जमीयतुल उलमा हिंद ने भी रेशमी खतूत साजिश केस के नाम से एक पुस्तक प्रकाशित की जो अंग्रेज सरकार द्वारा चलाए गए मुकदमों की फाईलें हैं जो इंडिया हाउस लंदन से मंगाकर उसका उूर्द अनुवाद है। पुस्तक के अंत में कौन क्या है ना से एक परिशिष्ट है उसके पृष्ठ 188 पर रिपोर्ट है, लिखा है

''हज़रत मौलाना के नाम ख़त में इसका तज़करा है यह गालिबन रायपुर जिला सहारनपुर यू.पी. के मौलवी अब्दुर्रहमीद है। जो मौलाना रायपुरी के नाम से मशहूर है। यह मौलाना महमूद की जिहाद की स्कीमों में शरीक थे। यह देवबन्द के मदरसे की कमेटी में भी शामिल थे। ऐसा मालूम होता है कि मौलाना महमूद की अनुपस्थिति में इसे नायब नुमाईन्दे के तौर पर रूपया जमा करने और उसे हमदुल्ला को पहुंचाना था।''

मौलाना हमदुल्ला कौन थे ?

आप पानीपत के रहने वाले थें आपके पिता का नाम सिराजुद्दीन था। आप हज़रत शेखुल हिंद की डाक देखते और पत्र व्यवहार करते थे। जब हज़रत शेखुल हिंद अरब चले गए तो आपको कहा गया कि क्रांति का पूरा रिकार्ड लेकर पानीपत चले जाओ। आपने ऐसा ही किया। हज़रत रायपुरी जो भी रूपया चंदे में जमा करते इनके द्वारा सीमा प्रांत को भेज देते या क्रांतिकारियों को वजीफे के रूप में भेज देते। सीमा प्रांत में जो भी संदेश या खबर हज़रत रायपुरी को भेजनी होती। यह हज़रत मौलाना हमदुल्ला के द्वारा भेजी जाती थी।

हज़रत मौलाना कारी मुहम्मद तैयब साहब की शादी

हज़रत मौलाना कारी मुहम्मद तैयब साहब मोहतमिम दारूल उलूम देवबंद इस नाम से रोजनामा नई दुनिया मदनी नंबर में एक मजमून छपा है जिसमें लिखा है –

''हज़रत शेखुल हिंद का इसरार था कि तैयब का रिश्ता रामपुर मनिहारान के खानदान में मौलवी महमूद साहब की लड़की से किया जाए। जब वालिद साहब, मौलाना हबीबुर्रहमान साहब और दुसरे हजरात की राय ने इसको मान लिया तो हज़रत ही ने बड़ी उमंग,जोश और मुसर्रत से फरमाया कि भाई यह रिश्ता मैं ले कर जाउंगा। चुनांचे रिश्ते का पैगाम खुद हज़रत शेखुल हिंद लेकर गए और वहां फरमाया कि भाई इस वक्त हज़रत नानौतवी के घराने के एक डूम और हज्जाम की हैसियत से रिश्ते का प्यामी बन कर आया हूं और रिश्ता हो गया ।

दुख और अफसोस के साथ आगे लिखा है–

''अफसोस यह है कि जब निकाह का समय आया तो हज़रत शेखुलहिंद मालटा के असीर हो चुके थे। रामपुर में बसिलसिला बारात सारे अकाबिर जैसे हज़रत

मौलाना अशरफ अली थानवी, हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम रायपुरी और देवबन्द सहारनपुर के सभी अकाबिर और मसाइख जमा थे। मगर हज़रत शेखुल हिंद न थे।''

कारी तैयब साहब की शादी का अंतरंग वर्णन मिस्त्री अहमद हसन साहब ने मुझे बतलाया।

जब हज़रत मौलाना कारी तैयब साहब की शादी की तारीख तय हो गई हाफिज़ मुहम्मद अहमद (कारी साहब के वालिद) साहब के साथ पंद्रह आदमियों का एक वफद रायपुर आया और हज़रत से शादी में शरीक होने की दरख्वास्त की। हज़रत राय पुरी ने पहले तो इंकार कर दिया लेकिन जब उन लोगों ने काफी इसरार किया तो बात मान ली। हज़रत के पास उस वक्त अपनी कोई सवारी न थी। हज़रत मौलाना हाफिज मुहम्मद अहमद साहब जो कारी मुहम्मद तैयब साहब के वालिद साहब और दारुल उलुम देवबन्द के मोहतमिम व हजरत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब के सुपुत्र थे ने हज़रत रायपुरी से कह दिया, हज़रत मे आपके लिए पिनस भेज दूंगा। हज़रत को यह बात कुछ पसंद नहीं आई इसलिए उनको उन्होंने सवारी भेजने से इंकार कर दिया।

शादी के लिए कार खरीदना

जब हज़रत मौलाना रायपुरी के साथ हाफिज मुहम्मद अहमद साहब की बातचीत चल रही थी तो पास ही में चौधरी मुहम्मद सिद्दिकी साहब के वालिद साहब चौधरी वजीर मुहम्मद भी बैठे थे। चौधरी वज़ीर मुहम्मद साहब हज़रत रायपुरी से बहुत लगाव रखते थे। चौधरी साहब अपने में रायपुर के बहुत बड़े जमींदार और रईस थे। आपको हज़रत रायपुरी से इतना लगाव था कि उनसे मिले बगैर चैन नहीं आता था। चौधरी साहब मौलाना से बहुत घबराते भी थे जिससे अदब के मारे उनके सामने बोलते तक नहीं थे। चौधरी साहब ने मुझे (मिस्त्री अहमद हसन साहब) अपने पास

बुलाया और धीरे से कहा अगर हज़रत क़बूल फरमाएं तो मैं इनके लिए कार खरीद दूँ। उनकी बात सुनकर मैं हज़रत के पास गया और

अर्ज किया हज़रत चौधरी वजीर मुहम्मद साहब की ख्वाहिश है कि शादी के लिए एक कार खरीद ली जाए। हज़रत ने कुछ देर सोच कर फरमाया।

अच्छा अगर ऐसी ख्वाहिश है तो खरीद लो।

जब हज़रत ने मान लिया तो चौधरी वजीर मुहम्मद मुझे अपने साथ घर ले गए उस समय चांदी के रुपए होते थे इसलिए चार हजार रुपयों को दो कट्टों में भर लिया गया। चौधरी साहब के दो नोकर थे कामिल खां और हुसैन अली। एक–एक कट्टा उनके कंधों पर रखकर मेरे साथ कर दिया हम रुपयों को लेकर खानकाह आ गए।

एक अखबार में इश्तिहार था कि कमिश्नर मेरठ की कार बिकाउ है। मुझे हज़रत ने रुपये लेकर मेरठ भेजा। वहां मौलाना आशिक इलाही से मिला। उन्होंने मुझे शहर के चेयरमैन जनाब वजीहुद्दीन साहब से मिलाया उनके जरिए से कार का सौदा साढ़े चार हजार रुपये में हो गया। 500 रुपए चेयरमैन साहब ने अपने पास से दिए जो हमने बाद में रायपुर से उनके पास भेजे। हज़रत रायपुरी इसी कार से शादी में गए। इस कार को मैं स्वयं चलाया करता था।

शादी में शरीक हो ना

हम लोग रायपुर से रामपुर बारात में गए। हज़रत को उस मकान में ठहराया गया जिसमे हज़रत गंगोही ठहरा करते थे। मैं भी हज़रत के साथ ही ठहरा। जिले के सभी बड़े–बड़े उलमा वहां मौजूद थे। हज़रत रायपुरी अपने साथी रफीक़ हज़रत मौलाना महमुद हसन को बार–बार याद फरमाते थे सुबह के समय हज़रत कारी मुहम्मद तैयब साहब और उनके वालिद साहब हज़रत रायपुरी के पास सलाम करने

आए। हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब ने हज़रत कारी तैयब को पांच रुपये नजर किए। कारी तैयब साहब ने लेने से इंकार किया। इस पर उनके वालिद साहब हाफिज़ मुहम्मद अहमद साहब ने फरमाया।

''अरे इंकार मत कर, ले ले कभी भी हाथ खाली नहीं रहेगा।''

हज़रत शेखुल हिंद के मकान पर ठहरना

रामपुर से बारात के विदा होने के पश्चात हम लोग देवबन्द आए। हजरत रायपुरी ने फरमाया सबसे पहले हमको सीधा हज़रत शेखुल हिंद मौलाना महमुद हसन के मकान पर चलना है। हम सीधे हज़रत शेखुल हिंद के मकान पर चले गए बाकी सब लोग अपने–अपने मकानों को चले गए। जब हज़रत रायपुरी हज़रत शेखुल हिंद के मकान पर पहुंचे तो उनके छोटे भाई मौलाना हकीम मुहम्मद हसन साहब थे। यह हज़रत को देख कर रो पड़े। हज़रत ने उनकी हिम्मत बंधाई और हौसला बढ़ाया और फरमाया हज़रत शेखुल हिंद इज्जत के साथ वापस तशरीफ लाएंगे।'' जब दूसरे लोगों को पता चला कि आप यहां ठहरे हैं तो फिक्रमंद हुए क्योंकि वह समय ऐसा था कि जब हज़रत शेखुल हिंद के मकान की ओर जाना भी जुर्म समझा जाता था। जो भी कोई व्यक्ति उधर उनके घर जाता तो अंग्रेज और सरकार उसको शंका की दृष्टि से देखती थी। हज़रत ने अपने एक लाल रूमाल में बीस रूपए बांध कर हज़रत शेखुल हिंद की अहलिया (पली) मोहतरमा को दिए। उन्होंने भी आपसे शिकायत की कि आपके सिवा मदरसे वालों ने हमारा ख्याल रखना छोड़ दिया। आपने उनको भी दिलासा दिया और हिम्मत से काम लेने को कहा।

इस प्रकार एक क्रांतिकारी अपने क्रांतिकारी साथी के साथ यहां आठ दिन ठहरे और उनकी हिम्मत बंधाई।

दारुल उलूम का ठहरना

हज़रत रायपुरी को हज़रत शेखुल हिंद के मकान पर ठहरे हुए जब आठ रोज़ गुज़र गए तो दारुल उलूम वालों की चिंता बहुत बढ़ गई। क्योंकि हज़रत शेखुल हिंद के मकान पर जो भी जाता तो अंग्रेज सरकार की ब्लैक लिस्ट में उसका नाम लिख लिया जाता था। अब वहां जाए तो कौन जाए? मरदसे वालों ने इस समस्या को हल करने के लिए एक तरकीब निकाली। उन्होंने तकरीबन पंद्रह आदमियों की एक जमाअत बनाई जिसके सदर मौलाना हबीबुर्रहमान बनाए गए। सब लोग जमात के साथ हज़रत रायपुरी को लेने के लिए हज़रत शेखुल हिन्द साहब के मकान पर पहुंचे। हज़रत से दारूल उलूम में चलने के लिए अर्ज किया हज़रत रायपुरी ने फरमाया।

''नाचीज़ के पास सिरफ़ इत्तिला भेज देते, मैं खुद ही हुक्म की तामील के लिए हाज़िर हो जाता'' सभी हज़रात ने विनम्रता पूर्वक कहा।

''भला आप कहां, हम कहां हम तो आपकी जूतियों की खाक भी नहीं। इस पूरी जमात के साथ हज़रत रायपुरी दारूल उलूम में तशरीफ ले गए जहां आपको बाबे अजहर के ऊपर के कमरे में ठहराया गया। आपके साथ मेंडू के अमीर खां साहब भी ठहराए गए। मैं भी उनसे मिला खां साहब वो शख्स थे जो 1857 ई0 में हज़रत हाजी इमदादुल्ला और उनकी पार्टी के साथ रहे। उस समय की पूरी घटनाएं उनको ठीक ठीक याद थीं। उनसे पूछ पूछ कर उनकी याद्दाश्त के मुताबिक लोगों ने बड़ी किताबें लिखी हैं।

हज़रत रायपुरी भी वहां दारूल उलूम में तकरीबन एक सप्ताह ठहरे थे इस पूरे हफ्ते दारूल उलूम में जो चहल–पहल रही उसका बयान करना बहुत कठिन है। तमाम दिन उलमाओं का जमघट रहता था। पूरे हिंदुस्तान के उलमा उस समय देवबन्द में जमा थे। हज़रत के साथ मौलाना नूर मुहम्मद साहब भी थे जो हज़रत के तालीमी और मदरसों के प्रोग्राम को चलाने में मददगार रहते थे। आज भी कुरान शरीफ पढ़ने वाले बच्चों को सबसे पहले नूरानी कायदा पढ़ाया जाता है। इस कायदे का नाम हज़रत मौलाना नूर मुहम्मद के नाम पर ही है।

मदरसा मज़ाहिर उलूम का झगड़ा

दारूल उलूम देवबन्द की भांति मजाहिर उलूम भी सहारनपरु में एक अरबी मदरसा है। इस मदरसे को भी नानौता के एक मौलाना हज़रत मज़ाहिर हसन साहब ने स्थापित किया था। उन्हीं के नाम पर इस मदरसे का नाम है।

जिन दिनों हज़रत रायपुरी दारूल उलूम देवबन्द में ठहरे हुए थे यहां मजाहिर उलूम में एक किस्सा हो गया, किस्सा यह था कि सहारनपुर जमा मस्जिद और मजाहिर उलूम के मुतवल्ली एक बड़े मालदार और व्यापारी व्यक्ति जनाब हाजी अहमद जान थे। किस्मत की कम नसीबी से उनका दिवाला निकल गया। रूपए की कमी पड़ गई मदरसे वालों ने अपना रूपया मांगा तो उनके पास था नहीं इसलिए वह दे न पाए। इस बात को देख कर मजाहिर वालों ने हाजी अहमद जान के वारंट गिरफ्तारी जारी करा दिए। उन बेचारों को बड़ी मुसीबत आई। वह छुपते–छुपते फिरने लगे। यह केस हज़रत रायपुरी के समाने आया। हज़रत सहारनपरु में बेहट वालों की कोठी में ठहरे हुए थे।

मजाहिर उलूम के जिम्मेदार हज़रात में मौलाना खलील अहमद साहब भी शामिल थे वह सभी लोग हज़रत रायपुरी के पास आए और फैसला कराने की बात कही। हज़रत ने पहले उनको डांटा और कहा,

''जब आप लोगों ने पहले ही उनके वारंट कटवा दिए हैं अब केस अदालत में चला गया है मैं अब क्या कर सकता हूँ और क्या फैसला दूँ। सब लोगों ने बड़ी जिद की जो हज़रत ने वादा फरमाया और एक आदमी को हाजी साहब के पास भेजा हज़रत मिस्त्री जी कहते हैं ''हाजी अहमद जान अपनी गिरफ्तारी के डर से हज़रत के पास रात के 12 बजे आया और पैरों में पड़कर रोने लगा। हज़रत ने उसको दिलासा दिया और कहा घबराओ नहीं''

सुबह को जब दोनों फरीक आमने सामने आए तो हाजी अहमद जान ने हज़रत रायपुरी से कहा हज़रत मेरे पास मेरे रहने का मकान है आप उसको नीलाम कर दीजिए हज़रत ने फरमाया अगर आपका मकान नीलाम करा दिया तो आप और आपके बाल बच्चे कहां जायेंगे? इसके बाद मदरसे वालों को संबोधित करते हुए बोले।

''आप लोग भी कितनी बेसमझी की बात करते हैं अगर हाजी साहब के पास रूपए होते तो आपको बिन मांगे ही दे देते। अब क्या वारंट से इसका खून चूसोंगे। जब आप लोग ही ऐसी गिरी हुई बातें करते हैं तो दुनिया का क्या हाल होगा?

इस बात को सुनकर सब लोग बड़े नादिम हुए और कचहरी जाकर उनका वारंट वापस ले लिया।

सर सैयद का सहारनपुर आना

हज़रत मिस्त्री अहमद हसन साहब ने एक बड़ी मर्मिक घटना मुझे बतलाई वह यह कि एक बार सर सैयद अहमद खां सहारनपुर में तशरीफ लाए। जब लोगों को इस बात का पता चला तो उन्होंने सहारनपुर की तमाम मस्जिदों के दरवाजे बंद कर दिए। उनको किसी भी मस्जिद में नहीं घुसने दिया। जब हज़रत रायपुरी को पता चला तो उन्होंने फरमाया। ''यह कोई अच्छी बात नहीं। सर सैयद साहब हमारे बुजुर्गों के साथी हैं यह भी मुसलमानों की भलाई का काम कर रहे हैं जिसका अंदाजा कुछ दिनों के बाद होगा।

हज़रत की मेहमान नवाजी

हज़रत मौलाना आशिक इलाही मेरठी अपनी पुस्तक तजकि रतुल रशीद जिल्द दोम के पृष्ठ नं0 156 पर लिखते हैं।

''हज़रत मौलाना रायपुरी अपनी संतोषी जिन्दगी में अपने शेख (पीर) के पद चिन्हों पर चलने वाले हैं। यद्यपि तिगरी और रायपुर में आपकी मौरूसी जायदाद गुजारे के योग्य मौजूद है मगर आपके संतोष के कारण दूसरों के काम आ रही है। अतिथि सत्कार में मैने आपके मुकाबले कोई आज तक नहीं देखा। मेहमान नवाज़ी की हद नहीं। दस्तर खान का फैलाव देख कर अमीर लोग भी हैरान रह जाते हैं।

हज़रत मिस्त्री अमद हसन साहब ने मुझको बतलाया, ''हज़रत के दस्तरखान पर बीस तीस और कभी कभी सैकड़ों आदमी खाना खाते थे। खाने और मेहमान को आराम पहुंचाने का इतना बढ़िया इंतज़ाम था कि बड़े बड़े अमीर लोग भी उनके इंतजाम को देख कर दंग रह जाते थे। आपके पास समाज और देश के ऊंचे से ऊंचा और नीचे से

नीचा व्यक्ति आकर मेहमान होता था। आप मुल्क के एक घास खोदने वाले और ऊंचे से ऊंचे चिंतक को एक ही स्थान पर बैठा कर खाना खिलाते थे।

गरीबों से मुहब्बत

ह़ज़रत रायपुरी को जब रायपुर के जमींदार और अमीर लोग गांव की जामा मस्जिद में ले गये और वहां रहने के लिए एक कमरा दिया गया तो वहां आपकी तबीयत नहीं लगी इसका कारण यह था कि गांव की या गांवों के आसपास की गरीब जनता को आपसे मिलने में रूकावट थी क्योंकि गरीब जनता अपने अमीर जमींदारों से घबराती थी । जब आपको इस बात का अंदाजा हो गया कि गरीब जनता यहां आने से घबराती है तो आपने वहां से अलग रह कर जीवन व्यतीत करने की बात को अहमियत दी। इसके पश्चात गांव वालों ने आपके लिए गांव से बाहर खानकाह बना दी।

हज़रत मिस्त्री अहमद हसन साहब उनके गरीबों से प्रेम और मुहब्बत का वर्णन करते हुए फरमाया है। ''आपके पास अदना से अदना आदमी आ जाता तो उसको बड़ी मुहब्बत और शफकत से बिठाते। उसको खाना खिलाते। उस से हाथ मिलाते और खैरियत पूछते। गांव के अमीर जमींदार इसको पसंद न करते थे। कुछ चंद आदमी थे जो हज़रत के व्यवहार को ठीक मानते थे बाकी कुछ अमीर लोग तो वहां आने से कतराते थे और अक्सर कहा करते थे।''

''हज़रत हम आपके पास अया तो करते लेकिन आपके यहां तो तेली जुलाहा मजारे, काश्तकार, कमीन लोग भी चारपाई पर हमारी बराबर

में बैठते हैं भला उनका और हमारा क्या मुकाबला? हम और वे मजदूर कभी भी बराबर नहीं हो सकते?

इन बातों को सुनकर हज़रत फरमाया करते थे।

''भाई तुम कुछ भी कहो मुझे इन गरीबों में से इंसानों की खुशबू आती है और लगता है कि आने वाला जमाना इन्हीं का होगा दुनिया में इस्लाम अमीरों से नहीं गरीबों के दिलों से फैला है।''

हज़रत मिस्त्री जी ने फरमाया गरीब और अमीर के फर्क को कम करने के लिए हज़रत उन ज़मीदारों के मुकाबले में मुझसे काम कराते थे। पास बिठाते थे और अक्सर उनके मुकाबले में मेरी बात को अधिक मानते थे।

औरतों का सुधार

मुसलमानों में स्त्री को पुरूष के सहारे जीना पड़ता है। जिसके कारण पुरूष के अत्याचार और अन्याय से स्त्री जाति बड़ी दुखी थी उन मुसलमान राजपूतो में हिंदुओं की भांति यह रिवाज था कि बेवा का निकाह दोबारा नहीं करते थे न औरत को स्वयं अधिकार था कि वह अपना निकाह कर सके। लड़की को गिरी हुई नज़र से देखते थे। जिसके यहां लड़की पैदा हो जाती थी उसको अभागा माना जाता था। हज़रत ने स्त्री जाति को सम्मान दिलाने, उसकी हालत सुधारने की बात सोची ही नहीं बल्कि व्यवहारिक रूप से सुधार का बीड़ा उठाया। हज़रत मौलाना आशिक इलाही मेरठी अपनी पुस्तक तज़किरतुल खलील पृष्ठ 223 पर तहरीर फरमाते हैं।

''निकाह बेवागान (विधवाओं) आपकी कौम में एब (बुराई) समझा जाता था इसी की इस्लाह में आपने बहुत कुछ तकलीफें सही और मसाइब बर्दाश्त किये। अमलन (व्यहारिक) इसकी सुन्नत साबित करने के लिए स्वयं भी एक बेवा से निकाह किया और इस निकाह पर जो कुछ ताना तशना और जान के खतरे आपको पेश आये उनको आपने शेरो शकर समझ कर प्यार से उसका मज़ा लिया।''

हज़रत रायपुरी को विरासत (उत्तराधिकार) से प्यार नहीं था

हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब को दुनिया की इज्जत, बड़ाई और माल व जायदाद से कोई लगाव नहीं था न ही कभी आपने इस बात के लिए कोई प्रयत्न किया था। हज़रत मिस्त्री अहमद हसन साहब फरमाते हैं ''हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब की हमशीरा (बहिन) रायपुर में ब्याही थी उससे एक लड़का मौलाना अशरफ अली था जो हज़रत के पास रहता था जब हज़रत की तबीयत कुछ बीमार चलने लगी तो गांव के जमींदार लोगों ने हज़रत रायपुरी से कहा, ''आप हज़रत मौलाना अशरफ अली को अपना वारिस बना लें। हज़रत पहले तो खामोश रहे लेकिन जब लोगों ने दबाव देकर कहा, ''आप हज़रत मौलाना अशरफ को अपना वारिस बनाकर शहर जाकर रजिस्ट्री करा दें तो आपने फरमाया,

''मैं कहीं सहारनपुर वगैरा में किसी रजिस्ट्रार के समाने नहीं जाता हूं। इसके बाद गांव वाले रजिस्ट्रार को गांव में लाए। एक विरासत नामा लिखकर हज़रत रायपुरी शाह अब्दुर्रहीम साहब के सामने पेश किया। दुख भरे वातावरण में आपने उस विरासत नामे पर हस्ताक्षर किए। रजिस्ट्रार ने उनके बयान ले लिए। और विरासत हज़रत मौलाना के नाम हो गई।

हज़रत मिस्त्री अहमद हसन साहब फरमाते हैं।

''जब रायपुर के लोगों ने हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब से रजिस्ट्रार के सामने विरासत पर हस्ताक्षर करा लिए तो आपका मन रायपुर से खट्टा हो गया जिससे आपने रायपुर छोड़कर बेहट के एक जमींदार शाह जाहिद हसन की जमींदारी के गांव 'पीलियो' में जाकर रहना शुरू कर दिया और आप बीमार भी हो गए। पीलियो में ही आपका इलाज भी चलता रहा। लोगों को इस बात का आज तक पता नहीं कि हज़रत पीलियों में क्यों गए? वे केवल इस बात को जानते हैं कि हज़रत को वहां इलाज कराने में आसानी थी जबकि यह बात ऊपरी बात थी। इससे बढ़कर हज़रत की एक बड़ी राय भी यह बन गई थी कि मरने के बाद पीलियो में ही दफनाया जाए लेकिन रायपुर वालों के सामने कौन बोल सकता था। जब हज़रत की वफात हो गई तो जनाजे को रायपुर वाले उठा लाए।

हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी अपनी पुस्तक 'हज़रत मौलाना अब्दुल कादिर साहब रायपुरी के पृष्ठ 64 पर 'हज़रत रायपुरी के पीलियो जाने के सम्बन्ध में लिखते हैं।

''हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब के मर्ज की बढ़ोतरी हुई तो आप शाह जाहिद हसन के इसरार से उनके मौज़ा पीलियो में जहां की आबो हवा बहुत उमदा और सेहत बख्श समझी जाती थी और इस ख्याल से कि सड़क का कुर्ब (समीपता) समझा जाता था डाक्टरों के आने जाने में सहूलियत होगी वहां चले गए।''

रिसाला सवानह रहीमिया लेखक नसर इब्न डॉ. जफर साहब बनारसी मजाहरी पृष्ठ 8 पर लिखते हैं ''आपने मृत्यु से पहने अपना तमाम

सामान यहां तक कि बदन के कपड़ों तक को वसीयत व हिसाब के ज़रिए दूसरों की मिल्कियत बना दिए थे मगर 13 सौ रूपये सफर खर्च के लिए मौलाना शाह अब्दुल कादिर साहब के हवाले कर दिए कि इनको महफूज रखो। मेरा और तुम्हारा हज का सफर खर्च है लेकिन ज्यों–ज्यों तबीयत अधिक खराब होती गई और ज्यादा खराब हो गई तो वह तेरह सौ रूपये भी गरीबों में बांट दिये एक हब्बा भर भी आपके पास मिल्कियत में नहीं था''

अंग्रेज सरकार द्वारा तफतीश अर्थात् पुलिस अफसर द्वारा पूछताछ

जब हज़रत शेखुल हिन्द की गिरफ्तारी अरब देश में हो गई तो अंग्रेज़ सरकार को आप पर संदेह हुआ, एक अंग्रेज पुलिस आफिसर आपके पास रायपुर खानकाह में आया। मिस्त्री अहमद हसन साहब ने उस समय का अपनी आंखों देखा हाल वर्णन इस प्रकार किया है।

'' हज़रत रायपुरी की तबीयत कुछ खराब चल रही थी। आप खानकाह वाली कोठी के अंदर के कमरे में लेटे हुए थे कि अंग्रेज़ सरकार की खुफिया पुलिस का एक आफिसर तकहीकात के लिए आया। हज़रत मरहूम ने फरमाया।

''आजाइए वैसे ही जूतों समेत चले आईए हम तो ज़रूरत पड़ने पर जूतों समेत नमाज भी पढ़ लेते हैं।'' अंग्रेज सी.आई.डी. अधिकारी अपने बूटों के फीते खोलते हुए बोला ''हज़रत आपकी बात ठीक है लेकिन मैं जूते समेत आपके पास आना फिलाफ अबद समझता हूँ।''

ऐसा कहकर और जूते निकालकर वह अधिकारी हज़रत के पास आया उसके साथ और दो तीन आदमी थे। हज़रत से हाथ मिलाया जब बैठने लगा तो हज़रत ने उसके लिए मूढ़ा मंगा दिया और वह उस

पर बैठ गया। कुछ देर के पश्चात जब अफसर ने मौलाना से पूछा, हज़रत सुना है आप बागियों के लिए चंदा इकटठा करते हैं। हज़रत ने बड़े सकून के साथ जवाब दिया।

''यह तो खानकाह है। यहां तो जो भी आता है कुछ ने कुछ लेकर आता है जिससे खानकाह का काम चलता है।

अंग्रेजों ने दूसरा सवाल किया यहां से बागी लोग रूपया ले जाते हैं। हज़रत ने फिर उसी सुकून की हालत में जवाब दिया।

''मेरी जानकारी के बगैर यहां से कोई भी आदमी एक पाई भी नहीं ले जा सकता।''

तीसरा सवाल पूछा आप मौलाना महमूद हसन और मौलाना उबैदुल्ला की बगावत के बारे में कुछ जानते हैं?

हज़रत ने बड़े भोलेपन से जवाब दिया ''आप कैसी बातें करते हैं कहा हज़रत मौलाना महमूद हसन और मौलाना उबैदुल्ला और कहां नाचीज। उनका मुझसे क्या मुकाबला। मैं जंगल में झोंपडी में अपनी जिंदगी गुजारने वाला। कहां हुकूमत, कहां में आपको किसी ने बहका दिया है कहां यह मुल्लाओं की जमात और कहां हुकूमतों की बात?''

हज़रत के बयान से अंग्रेज अधिकारी चक्कर में पड़ गया। वह इस नतीजे पर आया कि इस जंगल में समाज और शहर से दूर इतना बड़ा काम नहीं हो सकता। यह आदमी ऐसा नहीं है। अंग्रेज चला गया परंतु जो हिन्दुस्तानी गुप्तचर विभाग के मुसलमान थे जिनके नाम मज़हरी हसन और तसदुक हुसैन थे उन्होंने मौलाना को मुसलमानों में बदनाम किया कि इतना बड़ा पीर खुला झूठ बोलता है।

इस घटना और बदनामी का उत्तर हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी ने अपनी पुस्तक 'नक्शे हयात' जिल्द दोम में इस प्रकार दिया है।

''अफसोस है कि हमारे मालटा में असीर होने के कुछ दिन बाद ही मौलाना रायपुरी बीमार हो गए। उसी दशा में सी.आई.डी. का एक आफिसर उनके पास तफतीश के लिए अया। मौलाना ने तमाम इलजामात की तरदीद (इंकार) कर दी और कुछ पर लाइलमी का इज़हार फरमाया जिस पर यह नाकाम वापस आया और कहने लगा, मौलाना झूठ बोलते हैं कुछ लोगों का विचार है कि झूठ बोलना हराम है और गुनाह है। हज़रत मदनी ने इसका उत्तर इस प्रकार दिया है।

''दुनिया में ऐसे कलमात (वाक्य) को जवाब में इस्तेमाल करना जिन के दो मायने हैं मुतकल्लिम इनके दूसरे माने लें और मुखातिब कुछ और समझे यह झूठ नही है और ऐसे मौके पर बिला शुबा (निःसंदेह) जायज है। एक उदाहरण देते हुए आपने लिखा है।

''हज़रत इब्राहीम अलै. जब अपनी पत्नी सारा के साथ हिज़रत करते हुए फिलिस्तीन को तशरीफ ले जा रहे थे एक अत्याचारी बादशाह का मुल्क रास्ते में पड़ा जिसका तरीका यह था कि अगर कोई मर्द किसी खूबसूरत औरत के साथ उसकी सरहद से गुजरता था तो औरत को छीन लेता था अगर वह मर्द औरत का शौहर होता था तो उसको कत्ल कर दिया जाता था और यदि वह मर्द औरत का भाई होता था तो छोड़ दिया जाता था मगर औरत को प्रत्येक दशा में अपने अधिकार में ले लेता था। उसके जासूसों ने हज़रत सारा और हज़रत इब्राहिम अ. की खबर उस बादशाह को पहुंचाई। उसने तुरन्त सिपाहियों को भेजा तो हज़रत इब्राहिम ने हज़रत सारा को समझाया

तुम यह मत कहना कि यह मेरा शौहर है बल्कि तुम कहना यह मेरा भाई (इब्राहिम) है इस समय इस ज़मीन पर कोई ईमान वाला सिवाए मेरे और तुम्हारे कोई नहीं है। अर्थात् मैं तुम्हारा दीनी भाई हूँ यही जवाब बादशाह के लोगों को दिया कि वह मेरी बहिन है इस कारण उन्होंने इब्राहिम अ. को कत्ल नहीं किया।

यह जवाब झूठ और किज्ब नहीं है बल्कि मआरीज़ मे शुमार किया जाता है। मुखातबीन यानि बादशाह और उसके लोग यह समझे कि हज़रत इब्राहीम और हज़रत सारा आपस में पारिवारिक भाई बहिन हैं इसलिए उनको छोड़ दिया गया। इमाम शाफी फरमाते हैं; ''मआरीज़ में झूठ बोलने से बचाव है। इसी तरीके को हज़रत शेखुल हिन्द और उनके साथियों ने इख्तियार किया था। उनके जवाब अक्सर दो माने रखते थे जिनका असली मतलब कुछ और होता था और नकली कुछ और।

हज़रत मदनी आगे फरमाते हैं आम लोग समझते हैं कि झूठ हर हाल में बुरा और हराम है। हालांकि झूठ बाज औकात में फर्ज और वाज़िब हो जाता है और बाज़ मौकों पर मुस्तहब और बाज़ औकात में मबाह और बाज़ औक़ात में हराम और मकरूह होता है।

अगर किसी बेगुनाह और मुस्तहक को जालिम क़त्ल करता हो और झूठ बोल कर उसको बचाना मुमकिन हो तो उस वक्त झूठ बोलना वाजिब होगा। और यदि झूठ के जरिए कोई भलाई पैदा होती है जैसे दो लड़ने वालों में सुलह करा देना तो उस समय झूठ बोलना मुस्तहब है। जनाब हज़रत मुहम्मद सल. फरमाते हैं।

''जो शख्त झूठ बोलकर सुलह करा दे वह झूठा नहीं। इसी बात को हज़रत शेख सादी फरमाते हैं दरोग मस्लिहत आमेज वह अज रास्ती फितना अंगेज (अर्थात) इस्लाह (सुधारवाला)झूठ फितना (लड़ाई) वाले सचाई से बेहतर है)। इसी प्रकार अपनी बीवी से झूठ बोलने से यदि मुहब्बत बढ़े तो जायज़ है।''

हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब से उनके एक साथी मौलाना उज़ैर गुल ने पूछा जिन रिपोर्टों के बारे में सी.आई.डी. हम से पूछती है उसके बारे में जानते हुए भी हम इंकार करते हैं क्या यह झूठ नहीं है? हज़रत शेखुल हिन्द मौलाना महमूदुल हसन साहब ने जवाब दिया था, ''हमारे बुजुर्गों ने 1857 ई. में सब कुछ किया था मगर जब अंग्रेज हुक्काम ने पूछा सबका इंकार करते चले आए। किसी भी चीज़ का इकरार नहीं किया।''

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी की वफात (मृत्यु)

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी अपनी पुस्तक सवानेह हज़रत मौलाना शाह अब्दुल कादिर साहब रायपुरी के पृष्ठ 64 पर लिखते हैं।

''हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब की अलालत का सिलसिला वफात से पांच छः साल पहले शुरू हो गया था। आखिर के रमज़ान शरीफ में दोनों वक्त का खाना छोड़ दिया था। रात का खाना तो हर रमज़ान में पहले भी नहीं खाया करते थे मगर इस दफा दोनों वक्त सहरी व अफतारी का खाना तर्क कर दिया था। सारी रात सुबह तक कुरान शरीफ ही सुनते रहते थे सहरी के वक्त में सादा चाय ले जाया करता तो अरब की छोटी फिजान में सिर्फ एक घूंट बराये नाम ही

लेते। दो तीन दिन तो मैं अर्ज करता रहा कि हज़रत आप कुछ नहीं खाते तो जईफ (कमजोरी) हो जाएगें कुछ जवाब नहीं दिया। तीसरे चौथे रोज फरमाया मौलवी साहब अल्लाह तआला ने जन्नत का जायका नसीब फरमा दिया है इस खाने की जरुरत नहीं रही। हलांकि चेहरा इतना सुर्ख था जैसे बड़े लजीज खाना खाते हैं। मौत का बहुत शौक था बड़े ज़ौक से फरमाया करते थे कि यदि अल्लाह ताला ने यह वक्त नसीब फरमाए तो सुन्नत के मुताबिक तजहीर तदफीन करना। एक दिन फरमाया कोई अमल तो है नहीं खबर नहीं मौत का शौक क्यों है?

ये तमाम हालात पीलियो गांव के हैं जहां बीमारी के समय हज़रत को शाह जाहिद हसन साहब ले गए थे। हज़रत मौलाना अली मियां आगे लिखते हैं।

''यहां पीलियो गांव में आपका क़याम काफह मुद्दत तक रहा। हज़रत मौलाना शाह अब्दुल कादिर साहब और दुसरे हज़रत और खुसुसी खुद्दाम व अहले ताल्लुक वहीं मुकीम और खिदमत व तीमारदारी में सरगरम और मुनहमिक थे। 26 रबी उस्सानी 1337 हि. मुताबिक 29 जनवरी 1918 ई. को वह वक्त आ ही गया जिसका हज़रत को इंतिजार था और खिदमतगार जिससे डरते थे।

रात के समय यह वाका पेश आया दुसरे दिन सुबह को रायपुर वाले लाश मुबारक (मृत शरीर) को दफन करने के लिए ले आए। आखिर उसी बाग में जहां आपकी हयात शरीफ का आखिरी हिस्सा गुज़रा था मस्जिद के जुनुबी सिम्त आपका मज़ार शरीफ है।

हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी साहब अपनी पुस्तक 'नकशे हयात'में लिखते हैं, ''अफसोस कि हमारी असारत के जमाने में ही हज़रत रायपुरी का विसाल हो गया जिसकी खबर मालटा ही में हम को पहुंची इस पर हज़रत शेखुल हिंद को बहुत सदमा हुआ और अरसे तक रहा। उनके मरसिये में एक कसीदा भी लिखा था जो आपके कसाइद में हैं।

हज़रत शेखुल हिंन्द साहब का वह कसीदा जो उन्होंने हज़रत की वफात पर लिखा था हमको मिस्त्री अहमद हसन साहब के पास से मिला था। बाद में दारुल उलूम देवबन्द के मासिक रिसाला 'अलकासिम नं. 11 तारीख रमज़ान 1338 हि. में भी पुरा छपा हुआ मिल गया। एक दुसरा मरसिया 'दर्दे दिल' के नाम से हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी साहब का हमको मिला। ये दोनों मरसिए हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी की वफात पर दारुल उलुम देवबंद की एक शोक सभा जो 14 मार्च 1919 ई. उसी में पढ़े गये हज़रत मौनाला शब्बीर अहमद उसमानी साहब ने दर्दे दिल के नाम से एक मरसिया पढ़ा था। हम यहां उसी मरसिये को हिन्दी भाषा में उसके अर्थों सहित दे रहे हैं। पहले मरसिये की लाईने दी जाएंगी, तत्पश्चात् उनका भावार्थ दिया जाएगा।

मेरे दिल पर है क्यों आसारे वहशत आज क्या होगा,

यह कैसी मजलिसे ग़म है यह किस का तज़किरा होगा।

ज़मीं में ज़ल ज़ला क्यों है फलक पर ग़ल ग़ला क्यों है।

यह नफख सूर क्यों है क्या आज ही महशर बपा होगा।

तुम्हारे शोर शेवन से गुमां होता है यह मुझको,

कयामत से भी शदीद कोई हादसा बड़ा होगा।

सुनो ए हम दमों एक नुकता ए बारीक सूझा है,

समझ लेगा उसे जो साहबे फहमो ज़का होगा।

अगर यह मानते हो मौत आलिम मौत आलम है,

तो मौते मुरशिदे आलम का बोलो नाम क्या होगा।

संभल जाना कि अब मैं नाम की तसरीह करता हूं,

कि सामे का किनायों से जिगर शक हो रहा होगा।

तवाज़े और मुरव्वत गर कोई शखसे मुज़स्सम हो,

तो वह सरता कदम अब्दुर्रहीम बा सफा होगा।

जिन्होंने रायपुर में बेठ कर गंगोह देखा है,

उन्हें ही याद गंगोह का कुछ जुगराफ़िया होगा,

वह दरबाने रशीदी का नमूना अब कहां देखें,

कहां बाज़ार ऐसा इल्मों हिकमत का लगा होगा।

उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ –हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी साहब कहते हैं कि आज मेरा हृदय भयभीत क्यों हो रहा है यह ग़म की कैसी मजलिस है इसमें किसकी चर्चा होगी? यह क्या होने वाला

है? पृथवी आज कांप क्यों रही है। और आसमान में कैसा शोर मच रहा है। यह सूर क्यों फूंका जा रहा है क्या आज कयातम होने वाली है। ठहरो दोस्तों मुझे एक बात समझ में आई है लेकिन उसको वही समझेगा जिसमें बुद्धि और समझ होगी। कयामत से बढ़कर औलिया (ऋषि) की मृत्यु होती है। यदि यह मान लिया जाए कि विद्वान की मौत एक संसार की मौत है तो तमाम संसार को नेकी बतलाने वाले ऋषि की मौत का क्या नाम रखा जाएगा। अब तनिक सावधान हो जाओ मैं उनके नाम को खोलता हूँ क्योंकि सुनने वालों का हृदय इन संकेतों से फट गया होगा।

अतिथि सत्कार और सहानुभूति का यदि कोई साकार व्यक्ति तुम देखना चाहो तो वह सर से पैर तक शाह अब्दुर्रहीम रायपुरी हैं। जिन व्यक्तियों ने रायपुर में बैठ कर गंगोह के संबंध में सोचा और विचार किया है उन्हीं लोगों को गंगोह कें भूगोल के संबंध में कुछ जानकारी हैं अर्थात् वही गंगोह के बारे में जान सकेंगे। वह हज़रत रशीद अहमद के दरबार का नमूना अब कहां रह गया है और न वे ज्ञान और तात्विकता से भरी बातें रह गई हैं।

कहो ए हम नशीनों क्या ख़बर थी हम गरीबों को,

कि ज़ेरे ख़ाक यूं गंजीना ए इल्मो हुदा होगा।

जिसे तुम शेख का जपने मज़ारे पाक कहते हो,

लेकिन है वह तमन्नाअओं का मेरी मक़बरा होगा।

जमाने के अगर अरमान कुश तेवर यही होंगे,

तो डर यह है कि उम्मीदों का सारी खत्मा होगा।

चले हैं आप और महमूद भी आने न पाए थे।

इसे तो गालिबन दिल आपका भी मानता होगा।

गए हो छोड़ कर महमूद की औलाद को किस पर,

अगर होगा तो हमको अपसे यही गिला होगा।

बहुत अच्छा हमें सब छोड़ कर तनहा चले जाओ,

कि हामी हम गरीबों बे कसों का भी खुदा होगा।

तुम्हें क्या फिक्र है इसकी कि दर्दे कुर्ब फुर्कत से,

कोई तो चीखता कोई तड़पता लौटता होगा ।

बहुत बेजान होंगे और बहुत से नीम जां होंगे ,

इधर एक नीम बिस्मिल उधर बिस्मिल पड़ा होगा ।

कोई सकते में होगा शुश्दरों हैरत ज़दह होकर,

किसी की आंख से अश्कों का जारी सिलसिला होगा।

इधर खामोश सब इल्मों अमल की महफिलें होंगी,

उधर मुल्के विलायत में अजब मातम बपा होगा।

उपर्युक्त पंक्तियों का भार्वाथः मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी साहब अपने मित्रों को संबोधित करते हुए कहते हैं दोस्तों हम को यह पता नहीं था कि अच्छाइयों का खज़ाना इस प्रकार ज़मीन के अन्दर दफन

कर दिया जाएगा। तुम जिनको अपने पीर का मज़ार कहतें हो वह तो हमारी आशाओं की कब्र है। जमाना (काल) के यदि इसी प्रकार मारने वाले तेवर होंगे तो हमको भय लगरहा है कि तमाम आशाओं और इच्छाओं की समाप्ति हो जाएगी और कोई तमन्ना नहीं रहेगी। यह आपने क्या किया अभी तो महमूद (शेखुल हिंद) भी न आ पाए थे। इस बात को तो आपका मन भी भली भांति जानता है उनकी सन्तान जिसके (भारत की जनता) आप रक्षक थे ,उसको किस के भरोसे छोड़ कर चले गए हो हम को आप से यह बहुत बड़ी शिकायत है। चलो देखा जाएगा हमें तुम सब छोड़ कर अकेले चले जाओ। हम गरीबों असहायों और बेकसों की देखभाल करने वाला अब तो बस खुदा ही हैं तुमको इस बात की क्या चिंता कि जुदाई के गम में कोंई चीखता फिरे या तड़पता फिरे या बेचैन होकर लौटता तड़पता रहे। इसदशा से बहुत से बेज़ान हो गए हैं और कुछ अधमरे बेचैन पड़े होगे। कोई आश्चर्य चकित बेहोश पड़ा होगा जो होश मे हैं उनकी आंखों से आंसुओं की धारा बह रही होगी। इधर ज्ञान और सदाचार की मजलिसे चुप पड़ी हैं और उधर विलायत (योरुप मालटा) में बड़ा शोक और मातम हो रहा होगा।

नोटः यहां विलायत से तात्पर्य योरोपीयन देश है विशेष रुप से ब्रिटेन (इंगलैंड) जिसने हज़रत शेखुल हिंद मौलाना महमुद साहब को मालटा दीप जो अंग्रेजों के अधीन था की जेल में कैद कर रखा था यहां विलायत से इसी ओर संकेत है।

यह सब है पर मुसीबत एक इनसे ज्यादा है,

सुनाऊँ पर जरा दिल को पकड़ना थामना होगा।

कलेजा मुंह को आ जात है जब यह सोचता हूं मैं,
कि क्या कुछ हाल तेरा ए असीरे मालटा होगा।
उन्हें जो तुम से निस्बत थी उसे वह खूब समझेगार,
कि जिसने कैस का फरहाद का किस्सा सुना होगा।
वह आशिक था तुम्हारा और तुम्हारे तज़करे का भी,
कोई ऐसा तेरा शायद ही मुश्ताके लिक़ा होगा।
तुम्हारे जिक्र से जिस के बदन में जान आती थी,
तुम्हारे फिक्र में ही क्या खबर थी वह फना होगा,
ज़मीं वालों के मजमें में न उसने जब तुझे पाया,
फलक पर अब मलाइक की सफों में ढूंढता होगा।
वसीयत की है कुछ हसरत भरे अलफाज़ में उसने,
तुम्हें मालूम शायद यह न होगा या हुआ होगा।
ग़रज यह तो जवोर हक़ में पहुंचे और यों हम पर।
कहूं क्या क्या हुआ क्या हो रहा है और क्या होगा।
समझ जो किस कदर मग़मूम अहले मदरसा होंगे,
समझ लो किस कदर मखतल नज़ामे मदरसा होगा।

यह माना तुम वहां भी साबिकुल खैर हो लेकिन,

बड़ा ही काम इन टूटे दिलों का जोड़नो होगा।

उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थ : मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी साहब अपनी परेशानियों का वर्णन करते हुए कहते हैं कि यह तमाम परेशानियां तो हैं ही इन सब के अतिरिक्त सबसे बड़ी मुसीबत यह है कि उसके सुनाने के लिए आपको अपना दिल थाम कर उसको अपने काबू में रखना होगा। मेरा मन भयभीत हेा उठता है जब मैं यह सोचता हूं कि ए मालटा जेल के कैदी (हज़रत मौलाना महमूद हसन) तुझ पर इस समय क्या गुजर रही होगी। उनको आपसे जो लगाव था उसको वही समझ सकता है जिसने कैस और फरहाद का किस्सा सुन रखा होगा। वह (मौलाना महमूद हसन) तुम्हारा और तुम्हारी चर्चाओं का आशिक था इसलिए ऐसा तो कोई भी आपके चाहने वाला दूसरा कोई नहीं हो सकता। तुमसे संबंधित बात करने से उनके मन में जान आती थी यह कोई नही जानता था कि तुम्हारी चिंता करते–करते वहं स्वयं समाप्त हो जाएगा। वह पृथ्वी पर मनुष्य समुह में जब आपको नहीं पाता तो वह उसकी तलाश आसमान में फरिश्तों के समूह में अरंभ कर देता है और वहीं तलाश करता है। उन्होंने बड़े दुख और अफसोस के साथ जो वसीयत की है आपको संभवतः मालूम होगी या नहीं होगी। अल्लाह रब्बुल इज्ज़त के पास चले गए हो और यहां हम पर क्या गुज़र रही है इसकी आपको कोई खबर नहीं। यह मदरसे (दारूल उलूम) वाले जिनके आप संरक्षक थे आज कितने दुखी हैं। इससे उनके मदरसे का तमाम प्रबंध ही उलट पुलट हो गया है हम यह बात मानते हैं कि आप वहां भी शांति से सुखपूर्वक हो लेकिन यहां जो हमारे दिल टूटे पड़े हैं उनको कौन जोड़ेगा।

खुदारा जल्द आकर देख लो चश्में मुहब्बत से,

हमारा बस तुम्हारी एक नज़र पर फैसला होगा।

तेरे अल्ताफ पर कुर्बान सब पीरों जवां होंगे,

जमात में हर एक खुर्दो कलां तुम पर फिदा होगा।

अदा से तु जो देखोगे तो हम नज़रें कज़ा होंगे,

यह जां वक्फे सितम होगी यह दिल मश्के जफ़ा होगा।

तमाशा लोग देखेंगे हुनर हम आजमाऐंगे,

तेरे नाविक का और मेरे जिगर का सामना होगा।

तबस्सुम कर के जिस दम तुम दहन से गुलफिशां होंगे,

तो बुलबुल का उसी दम गुंचाये उमीदवार होगा।

बाहार आ जाएगी फिर ऐश केसामान बहम होंगे,

चलेगा दौर साग़र और तसलसुल दौर का होगा।

वही मीना वही खुम और वही जामो सुबू होंगे,

वही साकी वही मय और फिर वही मैकदा होगा।

बदल जाएंगे अय्यामे नहस जिल्ले हुमायूं से,

नसीबा बूम का भी हम सरेबख्ते हुमा होगा।

इधर तो सब सलूको ज़ज़्ब की राहें खुली होगी,

उधर तालीम सुन्नत का भी ताज़ा मशगला होगा।

जमीने हिंद जी उठेगी अनफ़ासे मुकद्दस से, तो गोया नफख़ सानी सूर इसराफील का होगा।

(नाविक तीर चलाने वाला)

उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थः मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी साहब निवेदन करते हैं कि अल्लाह के वास्ते आप शीघ्र आकार हम पर दृष्टि और प्यार कि नज़रें डालों। इस मुहब्बत भरी एक नज़र पर ही हमारा और तुम्हारा फैसला हो जाएगा। आपके प्रेम और मुहब्बत पर सभी बूढ़े और जवान एकदम कुर्बान होने को तैयार हैं। पूरी जमात (गिरोह) के अंदर प्रत्येक छोटा बड़ा आप पर जान देने को बैठा है। जब आप प्यार भरी भावना से दृष्टि हम पर डालोगे तो हम एक दम उसके आधीन खींचे चले आएंगे और हमारा जीवन कष्ट उठाने को तैयार हो जाएगा और हमारा ह्रदय मुसीबतो को सहन करने का अभ्यस्त हो जाएगा। जब आपके तीर हमारे जिगर पर चलेंगे तो जनता इस हुनर के प्रदर्शन के तमाशे को देखेंगी। इसके पश्चात जब आप हंस कर अपने मुख से फूल बरसाएंगे तो बुलबुल की (हमारी) आशाओं के गुच्छे खिल उठेंगे। उसी समय चारो ओर बहार का मौसम आ जाएगा तथा सुख सुविधा का सामान बन जाएगा। उस सुखदाई समय में प्यालों का दौर आरंभ होगा जिसका सिलसिला लगातार चलेगा। उस समय वही सुराही और वही मटका वही पिलाने वाला और वही शराब खाना होगा इसके पश्चात बुरे दिन अच्छे दिनो में बदल जाएंगे। उल्लू का दुर्भाग्य भी सौभाग्य में बदल जाएगा। इधर

ईश्वर भक्ति की सब राहें खुल जाएंगी। हज़रत मुहम्मद साहब की सभी शिक्षाएं ताज़ा हो जाएंगी। हिंदुस्तान की जमीन पवित्र सांसो से जी उठेगी अर्थात इसराफील दोबारा अपने सूर में फूक मारेगा।

नोटः मुसलमानो के धार्मिक विश्वासों के अनुसार सूर एक प्रकार (रणभेदी जैसा) का आवाज करने वाला यंत्र है। जिस प्रकार सायरन आदि होता है। इसराफील उस फरिश्ते का नाम है जो इस यंत्र (सूर) को थामे खड़ा है। जब वह इसमें फूंक मारेगा यह जो आवाज होगी उसको सूर फूंकना कहा गया हैं। जब इसराफील प्रथम बार सूर फूंकेगा तो समस्त सृष्टि नष्ट हो जाएगी अर्थात सब जानदार मर जाएंगे। फिर दूसरी बार फूंकेगा तो सब मरे हुए जी उठेंगे। यहां दूसरी बार सूर फूंकने से तात्पर्य जीवित होने से है।

अगर तफसील उस सब की सुनों जो होने वाला है,

तो इन अशआर से हासिल नहीं यह मुद्दा होगा।

भला जज़बात का फोटो उतारे किस तरह कोई,

उतारेगा तो वह नाकिस भी होगा बदनुमा होगा।

लिहाज़ा इल्तजा यह है कि अब दस्ते दुआ उठे,

जमाअत के सरों पर बिल यकीन दस्ते खुदा होगा।

अगर हम सिदक और इखलास से उसको पुकारेंगे,

तो उदऊनली से जलवा अस्तजिब का रूनुमा होगा।

खुदाया हम जईफ और ना तवां है और निकम्में हैं,

कभी शायद ही कोई काम हम से बन पड़ा होगा।

सरापा जुर्म है, तकसीर है निसयां व गफ़लत है,

गुनाह वह कौन सा है जो नहीं हम से हुआ होगा।

जो जेबे तन किया मलबूस तकवा भी कभी हमने,

वह सोबे1 जूर2 होगा मकर होगा और रिया होगा।

फिर इन सब का बहाना तेरी रहमत को बनाते हैं।

नहीं ऐसा कोई दुज़दे दिलवार दूसरा होगा।

मगर नादिम है और मौतरिफ है और खाईफ है,

बड़ी तश्वीश है क्या माज़रा रोज़े जज़ा होगा।

तेरे बंदे हैं, और तेरे नबी का नाम लेवा हैं,

यकीं है कुछ करम हम पर ब हक्के मुस्तफा होगा।

यही उम्मीद है जो दुर्रे यकतां गुम हुआ हम से,

दोबारा आपके अफज़ाल से हमको अता होगा।

हमेशा के लिए जो नफसे कुदसी छिन चुका हम से,

अता खुल्दे बरी में उस को आला मरतबा होगा।

समझ में सूरते तारीख यह बकस्द आई है,

कि कह दूं दाखिले खुल्दे बरी ही माद्दा होगा।

(1. सोब–कपड़ा, 2. जूर–धोखा)

उपर्युक्त पंक्तियों का भावार्थः यदि आप उस सब को विस्तार से जानना चाहते हो जो कुछ होने वाला है तो यह कविता की पंक्तियां जो आपके सामने हैं इनसे वह उद्देश्य पूरा होने वाला नहीं है भला भावनाओं का फोटो किस प्रकार उतारा जा सकता हैं यदि कोई यह प्रयत्न करना भी चाहे तो भी फोटो ठीक उतारने वाला नही है कोई न कोई कमी उसमे रह जाएगी। अब तो बस प्रार्थना के लिए हाथ उठाये जाएं क्योंकि यह बात विश्वासपूर्वक कही जा सकती है कि जमात (समूह) के सर पर अल्लाह का हाथ होता है यदि सच्ची भावना और विनम्र ह्रदय से उसको पुकारेंगे तो उसका प्रकाश प्रकट हो जाएगा। ए खुदा हम निर्बल हैं असहाय हैं और निकम्मे हैं हमसे शायद ही कोई अच्छा कार्य बन पड़ा होगा। हम सर से पैर तक पापी हैं गलती करने वाले हैं हमसे भूल चूक होती रहती हैं जिस से गफलत में पड़े रहते हैं। वह कोई गुनाह ऐसा नहीं जो हमसे हुआ न होगा। कभी हमने यदि परहेज़गारी की बात की भी है तो वह केवल दिखावा मात्र ही रहा। इन सब बातों के होते हुए भी हमको तुम्हारी दयाशीलता पर उम्मीदवार है कि आप क्षमा कर देंगे। क्योंकि तू बड़ा कृपालु और सदयालु है। अपने किए पर हम लज्जित भी हैं और आप से भय भी खाते हैं कि कयामत के दिन हमारे साथ क्या सलूक किया जाएगा? ए खुदा हम तेरे बंदे हैं और तेरे नबी का नाम लेने वाले हैं हमको विश्वास है कि हज़रत मुहम्मद साहब सल्ल. के सदके से हम पर कृपा की जएगी। हमसे जो कीमती मोती खो गया है वह हमका दोबारा प्राप्त होगा। हमको यह भी विश्वास है कि जो

महान आत्मा हमसे छिन गई है उसको अवश्य जन्नत में स्थान दिया जाएगा। यही उनकी मृत्यु की तारीख का माद्दा है।

मुसद्दसे मालटा

अर्थात वह दर्द से भरा मरसिया जो हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी की मृत्यु की सूचना पाने पर शेखुल हिंद हज़रत मौलाना महमूद हसन ने मालटा द्वीप के कैदखाने में लिखा था। इस मरसिये की हमारे पास दो प्रतियां हैं एक प्रति मुझे हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी के खलीफा श्रद्धेय स्व.मिस्त्री अहमद हसन साहब ने दी थी दुसरी प्रति दारुल उलुम देवबन्द (सहारनपुर उ.प्र.) के रिसाला अलक़ासिम जिल्द न.11 अंक नं. 2 माह रमजानुल मुबारक 1338 हिजरी से प्राप्त हुई। इतिहास और साहित्य प्रेमियों की रुचि के लिए इस पुरे मरसिये को भी हिंदी लिपि में दे रहे हैं। चुंकि मरसिये की उर्दु भाषा बड़ी कलिष्ट और ऊंची है इसलिए भवार्थ भी साथ साथ दिया जा रहा है।

किब्लाओ काबाओ अमानी मुर्द

आलिमो हाफिज़े मसानी मुर्द

आरिफे हिकमते यमानी मुर्द

ताइरे अर्शो आशयानी मुर्द

ज़ीनतो जेब अलफसनी मुर्द

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द

भाबार्थः क़िब्ला जिसकी ओर मुंह करके पूरे संसार के मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं। काबा आल्लाह का वह घर जहां जाकर सारी दुनिया के मुसलमान प्रति वर्ष हज करते हैं। ये दोनों स्थान अरब देश के मक्का शहर में हैं। जब कोई मुसलमान किसी दूसरे मुसलमान को अति सम्मान देता है तो उसको इन दो शब्दों किबला व काबा से संबोधित करता है क्योंकि ये दोनों ही स्थान मुस्लिमों के लिए अति सम्मान के हैं। शेखुल हिंद हज़रत मौलाना महमुद हसन के मन में शाह अब्दुर्रहीम साहब के प्रति असीमित सम्मान था इसलिए उन्होंने शाह अब्दुर्रहीम साहब को क़िब्ला व क़ाबा शब्दों से सम्बोधित किया है।

अर्थात् हमारे अति श्रेद्धेय, विद्वान कुरान शरीफ के हाफिज तथा उसको भली भांति समझने वाले ब्रह्माज्ञानी, बुद्धि युक्त बाते बताने वाले जिस का ठिकाना अर्श (खुदा के पास) पर है तथा जो दूसरे हज़ार सालों की शोभा और रौनक उसी शाह अब्दुर्रहमीम सानी का देहंत हो गया।

हामिले दीन व हाफिले हसनात,

ख़ाजने खैर व काफिले बरकात,

कासिमें फैज व जामे अशतात,

साया ए लुत्फ व रहमते महदात,

ज़ीनतो ज़ेब अलफसानी मुर्द

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द

भाबार्थः दीन को मजबुती से पकड़ने वाले और अच्छाइयों को ग्रहण करने वाले, भलाई और बरकतों का खज़ाना रखने वाले तथा उनको चारों ओर बांटने यानी फैलाने वाले कृपा और दया के संग्रहालय दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रोनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

रहनुमा ए मसालिके ईमां,

रह न वरदे मनाज़िले ईकां,

रह न बरदे मराहिले अहसां,

साकि ए बज़्में वहदतों इरफां,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द

भाबार्थः ईमाम के रास्तों को बताने वाले, विश्वास और यकीन की मंजिलों के यात्री अहसान (ब्रह्मज्ञानी) के मार्ग पर चलने वाले, एकेश्वरवादी, मआरफत की महफिल के साकी, दूसरे हज़ार सालों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

नुर चशम अकाबिरे आलम,

मलजाओ मामने खासो आम,

सर परस्त मदारिसे इस्लाम,

ज़मुर्दम दी दई रशीद अनाम,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भाबार्थः पुर्वजों की आंख की रोशनी। प्रत्येक के लिए अमन का स्थान, इस्लामी मदरसों के संरक्षक, हज़रत रशीद अहमद की आंख की पुतली संसार में महान चरित्र वाले। दूसरे हज़ार सालों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

रासे सुलहा व सैयदे उलमा,

रौनके अफज़ार हलका ए फुकरा,

मसनदे आरा ए महफिले इरफां,

शाम ए वहहाज मजलिसे गुर्बा,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भाबार्थः चरित्र वान नेक व्याक्ति और विद्वानों के सरदार, अल्लाह वाले फकीरों की महफिल की रौनक बढ़ाने वाले,ब्रह्मज्ञान की महफिलों के अध्यक्ष। निर्धनों की महफिल की चमकती हुई शमा, दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

बहरे अल्ताफ व अबरो जूदो सखा,

रुहे अखलाक व जाने सिदको सफा,

कोहे तमकीन व काने इल्मो हया,

बद्रे आफाक व शम्सो इज़्जो अला,

जीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द

भाबार्थः महरबानियों के समंदर, सखावतों (दानशीलता) के बादल अच्छे और विनम्र स्वभाव की आत्मा, सच्चाई और अंतरात्मा की पवित्रता की जान। गंभीरता के पर्वत, ज्ञान और लज्जा की कान,आकाश में चौदहवीं का चमकता चांद। बड़ाई, इज्जत और सम्मान का सूर्य, दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

चशमाए फैज़ो रहमत और अहसां,

आरिफे रम्ज़े इल्मुल कुरान,

महमिले सिदक कौले फखरे जमां,

खैर कुम मिन तअल्लुमुल कुरान,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भाबार्थः अल्लाह को पहचानने के ज्ञान को जानने वाले कृपा और दया के स्रोत और कुरान के तात्विक ज्ञान को समझने वाले और हज़रत मुहम्मद सल्ल. की बात के योग्य तुम सबसे अच्छा वही है जो कुरान सीखे और समझे। इन सब बातों को समझने वाला हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

कामे शिर्क व बिदआत व इलहाद,

पाक रो पाक–बाज़ व पाक निहाद,

रह रौ व रहबरों व हादी नजाद,

मुशफ़िक़ व जांनिसारे अहले विदाद,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थः शिर्क (खुदा के साथ किसी का साझी बनाना) बिदआत (अंधविश्वास) और बेदीनी (अधर्म) को जड़ से उखाड़ने वाले स्वच्छ व्यवहार करने वाले सचाई पर चलने वाले जिनकी अंतरात्मा पवित्र है। प्रत्येक छोटे बड़े को सचाई का मार्ग बताने वाले लोगों से प्यार करने के लिए अपनी जान कुर्बान करने वाले दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

सूफ़ी वसाफी व सफी अव्वाब,

फानी व बाकी व तक़ी तव्वाब,

ख़ाशो वे खाज़े व रज़ी रहहाब,

लम यकुन फाह शान वाला सख्खाब,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थः अंतरात्मा की पवित्रता वाला सूफी व निस्वार्थ, अल्लाह से गहरा संम्पर्क रखने वाला इच्छा न रखने वाला अल्लाह से प्रेम की कामना रखने वाला बहुत अधिक परहेज़गार बहुत अधिक तोबा करने वाला। विनम्र स्वभाव और पवित्र मन से अल्लाह के सामने झुकने और आज्ञा पालन करने वाला। बहुत अधिक आवभगत करने वाला वह न निर्लज्जता के काम करने वाले और न बदजुबान थे। उन्हीं दूसरे हज़ार साल की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

मर हमें जख्में खस्ताओं नाकाम,

इस्तगीरे अरामिल व ईताम,

खादिमें शरा व जरशीने कराम,

रहमते जुल जलाल वल इकराम,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थः असफल और दुखी व्यक्तियों को सांत्वना देने वाला बेसहारों का सहारा विधवाओं और यतीमों को हाथ पकड़ने वाला अर्थात् उनकी मदद करने वाला। धार्मिक नियमों का पालन पोषण करने वाला। सम्मानित लोगों के उत्तराधिकारी वैभव और बड़ाई व इज़्ज़त वाला रब की कृपा का पात्र दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

हम रहे हम रहां वा बैला,

हम रौ हम रवां वा बैला,

हम दमे हम दमां वा वैला,

हम दवे दोस्तां वा वैला,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : साथियों का साथी, हमराहियों का हमराही दोस्तों और मित्रों का मित्र अफसोस आज उनके बीच से चला गया अर्थात दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

बागे उमीद मे खिजां अफसोस,

खाक मे गंजे शांयगां अफसोस ,

मर्ग और ईसा ज़मां अफसोस,

सर्द हो शमा खावरां अफसोस,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : बाग के हरा भरा होने की आशा के समय खिंजा (पतझड़) अफसोस की बात है। जो अच्छाइयों का खजाना हमारे पास था अफसोस वह मिट्टी में मिल गया । युग का ईसा होने पर भी अफसोस है कि वह मर गया । यह बात कितने अचरज की है कि

पूर्व का सूर्य छिप रहा है । अफसोस दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गयी।

नाज़िशे फख् दोस्तां न रहा,

जोर बाजुए हम रहां न रहा,

कद्र अफजाई खादमां न रहा,

लो हुदा खाने कारवां न रहा,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : जिस पर मित्रों को पूरा भरोसा और नाज था जो साथियों की शक्ति थी और उनकी भुजाएं थी जो अपने सेवकों को प्रोत्साहन देने वाला था काफले मे जोश दिलाने वाला हुदाखां (अरब देशों में ऊंटों के साथ उन पर सवार होकर यात्रा की जाती थी उस सामूहिक यात्रा को काफिला कहा जाता था। इस काफले मे ऊंट पर बैठ कर जो व्यक्ति मनोरंजन या सफर की सख्ती को भुलाने तथा यात्रियों का साहस बढ़ाने के लिए जो गाना गाता था उसको हुदीखां कहते थे। शाह साहब हज़रत मौलाना महमूदुल हसन की क्रांति की यात्रा के साथी थे इसलिए उनको अपने काफिले का हुदीखां कहा है) न रहा अर्थात दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गयी।

सीना कल तक था महशरे आलाम,

आज बैठे हैं कैसे फारिगेबाल,

जी मे कोई हविस रही न ख्याल,

जीना आता है क्यों जंजाल,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : कल तक जिन का मस्तिष्क आशाओं से भरपूर था वह आज पूर्ण रूप से शांत है। मन में कोई चाह और ख्याल तक भी नहीं रहा है। हम और हमारा यह जीवन बिल्कुल निरर्थक लग रहा है क्योंकि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गयी।

कब्र हो तेरी जब दिले सद चाक,

आरजूयें न क्यों हो तह खाक,

हो तबददुल जो ऐसा हैरत नाक,

दिल न हो आरजुओं से कैसे पाक,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : तेरी कब्र ऐसी है जैसे मनुष्य के हदय को सौ स्थानों से चीर दिया हो तो हमारी सब उम्मीदें जमीन के अंदर दफन हो गई हैं। जब इतना बड़ा परिवर्तन आ गया है तो हमारे दिल आशाओं से क्यों

खाली न हो जाए क्योंकि दूसरे हजार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गयी।

हुए उसमान जामे कुरान,

दह ब दह तुम थे कासिम कुरान,

तुम बिला शक थे नाइबे उसमान,

आज सुनसान क्यों न हो मैदान,

जीनतो जेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : हजरत उसमान रजि इस्लाम धर्म के तीसरे खलीफा थे उनसे पहले कुरान शरीफ अलग–अलग टुकड़ों में बिखरी हुई थी उन्होंने उसको इकट्ठा करके एक स्थान पर पुस्तक का रूप दे दिया। हजरत रायपुरी ने उसको प्रत्येक घर तक पहुंचाने का प्रयत्न किया। इस महान कार्य से हजरत रायपुरी हज़रत उसमान रज़ि के खलीफा नायब (उप) माने जाने लगे। जब कोई वस्तु बांटी जाती है तो वहां बांटने वालों और लेने वालों की भीड़ सी लग जाती है लेकिन जब बांट ने वाला चला जाता है तो मांगने वाले भी चले जाते है जिससे मैदान सूना सूना हो जाता है। यही दशा शाह अब्दुर्रहीम साहब की मृत्यु से हो गई। अब न कोई बांटने वाला रहा और न लेने वाला मैदान साफ और सुनसान है दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गयी।

आई है जिन बहार मे को ख़बर ,

तल्ख ही रहें गे वे ता महशर,

अहमर अबयज है गम मे सब अखजर,

मौजे कहती है समझे कोई अगर,,

जीनतो जेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : जिस समुद्र से गुजर कर यह दुखदाई सुचना आई है वे समुद्र इस सूचना की कड़वाहट से कयामत तक कड़वे ही रहेंगे। लाल सागर और सफेद सागर हरे हो गए। यदि कोई समझे तो तमाम लहरें कहती हैं कि दो हजार साल की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

आता योरोप में गम भला यह कहां,

तेरे दिल दादा गर न होते यहां,

किस के घर होता आनकर मेहमां,

किस से सुनता कहो यह आहो फुगां,

जीनतो जेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : चूंकि शेखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब मालटा की जेल में कैद थे और मालटा द्वीप योरोप महाद्वीप में है इसलिए कहते हैं कि यदि हम यहां युरोप मे न होते तो यह आपका

गम कहां आता। हम तेरे चाहने वाले यहां है इसलिए यहां आकर हमारा मेहमान हुआ है। हम न यहां होते तो इसकी दुख भरी कहानी कौन सुनता क्योंकि दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यू हो गई।

सर पर उस कोह को उठाता कौन,

गर्दन उसके लिए झुकाता कौन,

दिल के अंदर उसको बिठाता कौन,

पढ़ के यह रोता रुलाता कौन,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहमी सानी मुर्द,

भावार्थः हज़रत शेखुल हिंद साहब लिखते हैं कि आपका पहाड़ों से भी भारी ग़म जो यहां आया उसको कौन उठाता और कौन था जो उसके लिए अपना सर झुकाता और उस ग़म को अपने हृदय में बिठाता। दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहमी सानी की मृत्यू हो गई।

हम जो इस कोर दह में आधमके,

पेश ख़ेमे थे तेरे मातम के,

हम ही मूनिस है तेरे मातम के,

लब पे आता है साथ हर दम के,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : हमारा इस उजड़ अंधकार पूर्ण देश में आना तेरे मातम, दुख और शोक के लक्षण थे तेरे ग़म को ह्रदय में बिठाने वाले हम ही यहां हैं। इसी कारण प्रत्येक सांस के साथ यही बात होंठों पर आती है कि दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

तुम ने तनहा सफर किया यां से,

पहुंचे पर वां जहां है सब अपने,

रहम उन पर जो दुश्मनों में फंसे,

मस ग़ला कुछ न हो बजुज़ इसके,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थः मन की व्यथा को व्यक्त करते हुए हज़रत शेखुल हिन्द कहते हैं कि तुमने अकेले ही यहां से यात्रा आरंभ की और जहां सब अपने गए हुए हैं उनसे जा मिले। लेकिन यह तुमने क्या किया उन पर दया होनी चाहिए जो दुश्मनों के बीच में फंसे हुए हैं जिनको इस बात के अतिरिक्त किसी बात से कोई काम नहीं कि दूसरे हज़ार सालों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

छोड़ जाना हमें और इतनी दूर,

बेबस व लाचार व मजबूर,

था मरव्वत से आपकी बस दूर,

अब व जुज इसके कुछ नहीं मकदूर,

ज़ीनतों ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थः शेखुल हिन्द फरमाते हैं कि आप हमको बेबस और असहाय व मजबुर छोड़ कर इतनी दूर चले गए हैं कि हम आप की मुरव्वत और मेहरबानी से बहुत दुर हो गए हैं अब हमारे अन्दर इसके अतिरिक्त कोई ताकत नहीं रही कि यह कहें कि दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

खसता हालों से ये सतूदह सिफात,

बे नियाज़ी नहीं कमाल की बात,

क्यों न हो फिर हयात रश्के ममात,

बावफा जब करे जफ़ा हैहात,

ज़ीनतों जेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : हम टूटे हाल लोगों से लापरवाही करना कमाल की बात नहीं है तो और क्या है अफसोस यह हमारी जिंदगी मौत की तमन्ना

क्यों न करे जबकि वफा करने वाले बेवफाई करने लगे। दूसरे हज़ार वर्षों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

आप के जब्तो हिल्म से बईद,

क़ैद हस्ती को समझलो इतना शदीद,

सख्त जानी है उनकी क़ाबिलेदीद,

कैद दोहरी और उस पर यह मज़ीद,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : आप के धैर्य और सहनशीलता से यह बहुत दूर की बात है कि जीवन की कैद को आप कठोर समझे। ज़रा उनके जीवन को देखो कितना कठोर है जो दोहरी कैद में फंसे हैं और इस सख्ती के बावजूद उस पर यह कठोरता कि दूसरे हज़ार सालों की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

कैद दोहरी ओ तेरी दिल बंद,

आप को एक भी हुई न पसन्द,

चल दिए कैसे खुर्रम व खुर्सन्द,

मस्त मंदों को छोड़ कर पाबंद,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : ए दोस्त हम तो दोहरी कैद के अंदर अपना जीवन काट रहे हैं लेकिन आपको एक भी कैद पसंद नहीं आई। हम स्वतंत्र मस्त मलंग लोगों को छोड़ कर किस प्रकार हमको कैद में छोड़कर अलग हो गए। दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

तेरे मिलने की एक तमन्ना पर,

ज़िन्दगी जो कर रहे थे बसर,

कहिए अब क्या करें वे खस्ता जिगर,

जीना आज उन्को क्यों न हो दूभर,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : केवल इस एक तमन्ना पर कि आपसे मुलाकात होगी हम अपना जीवन गुजार रहे थे। अब आप ही बताइए यह टूटे हुए दिल लोग क्या करें? अपना जीवन उनके लिए दुभर क्यों न हो जबकि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

तू न हो जब जहां में जलवा फिजां,

नीम जां कुछ दिनों जिए भी तो क्यां,

अब रिहाई का भी मज़ा न रहा,

हिंद है मालटा से आज सिवा,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : जब आप इस संसार में उपस्थित नहीं हैं तो हम अधमरे लोग अपना जीवन इस संसार में किस प्रकार गुजारें। अब तो इस कैदखाने से छूटने का भी मज़ा बिल्कुल जाता रहा। भारत जो हमारे लिए स्वर्ग के समान है अब मालटा जहां हम कैद हैं इस से भी खराब हो गया है। क्योंकि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

हिंद चलने से है किसे इंकार,

सर के बल चलने को हैं तैयार,

पर समझ ले यह खूब ओ गम खार,

नार है जब दयार है बे यार,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : हमको हिंदुस्तान चलने में न कोई आपत्ति है और न एतराज। हम तो सर के बल वहां जाने को तैयार बैठे हैं लेकिन ए हमारे दुखों के हरने वाले गमखार यह बात तू भली भांति जान ले कि

जिस घर में कोई चाहने वाला नहीं है वह घर आग से भरा हुआ है। हम इसी गम में जल रहे हैं कि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

दर्दे फुर्कत में तेरी रूही फिदाक,

दिल है, ग़मनाक सीने है सदचाक,

हैं जमीं सख्त और दूर अफलाक,

नाला है और यह शेर हसरत नाक,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : तेरी जुदाई के गम में मेरी आत्मा आप पर कुर्बान हमारे दिल ग़मों से भरे हैं और हमारे सीने में सैकड़ों घाव हैं। ज़मीन बड़ी कठोर हो गई है और आसमान बहुत ऊँचा उठ गया है इस अफसोस नाक शेर को पढ़कर हम केवल यह फरियाद करते हैं कि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

रायपुर तुझे था मुहित्ते रजाल,

होता था हर तरफ से शद्दे रजाल,

अहले मिस्र और करा का था एक हाल,

हो गया आज यह ख़ाबों ख्याल,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : आप ही के कारण रायपुर लोगों के आने का स्थान था। चारों ओर से लोग छोटे बड़े खिंचे चले आते थे। शहर और गांव का बस एक ही हाल था। यह सब बातें आज एक सपना हो गई हैं क्योंकि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

एक दम से तेरे ब फ़ज़्ले खुदा,

था वह उम्मुल क़रा उम्मेकिरा,

आज हूं का मकान है एक वा,

गूंजती फिरती है फ़कत यह सदा,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : अल्लाह की कृपा और तुम्हारे होते हुए रायपुर बस्ती मेहमानों के लिए अतिथि सत्कार का एक स्थान था। आज बिल्कुल सुनसान हू का आलम बना हुआ है केवल अगर कोई आवाज़ सुनाई देती है तो बस यही है दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

थी हमेशा से तेरी जाए करार,

जन्नतुन माउ नहरे हा मिदरार,

अब वह है नहर चश्मे दरिया बार,

हाथ मल मल के कहते हैं अशजार,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : आप सदैव ऐसे स्थान पर रहा करते थे जहां जन्नत की नहर का पानी लगातार बहता रहता था। आज वह नहर ऐसी बन गई जिसकी आंख से ग़म के आंसुओं के पानी के दरिया बह रहे हैं। उस स्थान के पेड़ों के पत्ते हाथ मल मल कर यही कह रहे हैं कि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

मुहैयी इल्म थे इमाम ग़जाल,

तुम ये अहया कुनिन्दा ए आमाल,

करते थे मुर्दा सुन्नतों को बहाल,

आज उनकी करेगा कौन संभाल,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : हज़रत इमाम ग़जाली तो ज्ञान को जीवित करने वाले अर्थात उसके पोषक थे परन्तु आप तो ज्ञान पर आचरण करके उसको जीवित करने वाले थे। इसके अतिरिक्त धार्मिक आचरण और सुन्नतें

(ह. मुहम्मद स. के तरीके पर काम करना) जो समाज से लुप्त हो चुकी थी उनको आपने दोबारा समाज में जारी किया। अब आपके बाद उनको कौन संभालेगा? यही दुख है कि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

कहते थे सुन के हादसे पैहम,

करे किस किसका गम इलाही हम,

बन गया सब ग़मों का आज एक ग़म,

हो गए एक ग़म में सब मुदग़म,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : तमाम घटनाएं इस दुख भरी घटना को सुन कर बार बार यह कहती हैं कि ए अल्लाह हम किस किस घटना का गम उठाएं आज तो जितने भी ग़म थे एक स्थान पर इकट्ठे होकर एक ही ग़म में समा गए हैं। और वह ग़म यह है कि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

सब ग़मों में आ गई ख़िफ्फ़त,

पर तेरे ग़म में बढ़ गई शिद्दत,

यह इदग़ाम की है ख़ासियत,

नोहा अब यह है हो कोई आफत,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : आप (शाह अब्दुर्रहीम साहब) की मृत्यु की दुख भरी सूचना आने पर हमारे जितने भी ग़म और कष्ट थे उनमें कमी आ गई लेकिन आपके ग़म में अत्यधिक बढ़ोतरी हो गई। कई वस्तुओं के मिल जाने की यही विशेषता है। हमारे सामने चाहे जितना बड़ा कष्ट आए लेकिन हमारा रोना धोना तो बस अब यही रहेगा दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

बारे अहबाब कौन उठाएगा,

आंखों पर कौन उन्हें बिठाएगा,

फितनों को कौन अब हटाएगा,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : आपके न रहने से दोस्तों पर आपत्तियों का जो बोझ पड़ रहा है अब उसको कौन उठाएगा तथा जो इष्ट मित्र वहां जाएंगे उनकी आवभगत कौन करेगा। आपके मित्रों को जो कष्ट आकर घेरेंगे उनमें हाथ कौन बटाएगा। हमें तो यही दुख है कि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

रूठों को कौन मनाएगा,

टूटों को कौन अब मिलाएगा,

बिगड़ों को कौन अब बनाएगा,

झगड़ों को कौन अब मिटाएगा,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : आपके न होने से रूठों को मनाने वाला अब कौन होगा मनमुटाव से जो आपस में दिल टूट जाते हैं अब उनको कौन मिलाने वाला होगा। आपसी फूट से जो बातें बिगड़ गई है। अब उनको कौन ठीक करेगा जो उलझनें और झगड़े आपस में उलझ गये हैं अब उनको कौन सुलझाएगा? हमारा तो यही कहना है कि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

हम दमों राय किस से लोगे कहो,

मश्वरे किस से अब करोगे कहो,

राजे दिल किस से कहोगे कहो,

रायपुर भी कभी चलोगे कहो,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : दोस्तों अब यह बतलाओ कि सलाह मश्वरा और सुझाव किस से लोगे और किस की राय पर चलोगे। ए मित्रों तुम अब अपने हृदय का भेद किस से कहोगे। अब इस बात पर सोच विचार करो

कि अब कभी रायपुर चलने का प्रोग्राम भी बनाओगे कि नहीं। क्योंकि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

हो मुबारक तुम्हें ब इज़निल्लाह,

रहमतों फ़ज़्ल व कुर्बे हक़ या शाह,

गुर्बत व हसरत व फिराक़ में आह,

विर्द अपना तो है यह शामो पगाह,

ज़ीनतो ज़ेब अलफ सानी मुर्द,

शाह अब्दुर्रहीम सानी मुर्द,

भावार्थ : इस अंतिम छंद में हज़रत शेखुल हिंद मौलाना महमूद हसन साहब शाह अब्दुर्रहीम साहब के लिए अल्लाह से दुआ करते हुए कहते हैं कि अल्लाह के फज़्ल और कृपा से आपको उसकी समीपता मिल जाए और वह आपको मुबारक हो। देश से दूर परदेश के कैदखाने (माल्टा) में बड़ी हसरत और जुदाई की हालत में अपना तो सुबह शाम यही कहना है कि दूसरे हज़ार वर्षो की शोभा और रौनक शाह अब्दुर्रहीम सानी की मृत्यु हो गई।

इनते महान व्यक्तित्व के व्यक्ति राष्ट्र प्रेमी संत किस खामोश जीवन को जी कर हमारे बीच से चले गए। इस बात के लिए इतिहास बिलकुल चुप है।

लेखक का संक्षिप्त परिचय

नामः— प्रोफेसर मुहम्मद सुलेमान

जन्मतिथिः— सात जनवरी उन्नीस सौ उन्तालीस (07—01—1939)

जन्म स्थानः— ग्राम मालाहेडी, डा0 रण्डोल

जि0 सहारनपुर उ0प्र0

शिक्षाः— एम.ए. राजनीति शास्त्र व समाज शास्त्र, बी.एड. अदीब कामिल, साहित्य रत्न, फ़जिले दीनयात व साहित्यालंकार,

कार्यः— 1975 ई0 से 1995 ई0 तक शैखुल हिन्द शौध संस्थान में शोधकर्ताके पद पर कार्य किया। 1975 से 1995 ई0 तक ''विकास, पाक्षिक का उप संम्पादक रहा। 1980 ई0 से 1991 तक हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी के सुपुत्र हज़रत मौलाना सैयद अरशद मदनी नाज़िम तालिमात दारूल उलूम देवबन्द व जमीअतुल उलेमाए हिन्द के राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ मिलकर कुरान शरीफ़ का हिन्दी में अनुवाद और व्याख्या लिखी, जो जमीअतुल उलमा—ए—हिन्द ने प्रकाशित की तथा जिसका विमोचन उस समय के उपराष्ट्रपति डा0 शंकर दयाल शर्मा ने 2 दिसम्बर 1991 ई0 को फिक्की एडिटोरयम नई दिल्ली में किया।

1993 ई0 से 1999 ई0 तक मरकजुल मारिफ संस्था के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष पद पर कार्य किया।

1998 ई0 में राबता आलम–ए–इस्लामी मक्का अल मुकर्रमह (सऊदी अरब) ने अपना विशिष्ट मेहमान बनाकर अपने यहां बुलाया और हज कराया।

1999 ई0 से आज तक मदनी आई.टी.आई के प्रशासनिक विभाग में सेवारत हैं।

पुस्तकेंः– लेखक की अब तक लगभग 25 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें कुछ मुख्य निम्न प्रकार हैं। 1– माल्टा का कैदी, 2–कुरान शरीफ़ अनुवाद और व्याख्या, 3–विवाह और तलाक के मसले, 4–रोज़े के मसले, 5–नमाज के मसले, 6–ज़कात के मसले, 7– कितना महान है भारत मेरा, 8– एक राष्ट्रप्रेमी आत्मा, 9– गुलाब के दो फूल, 10–हम एक हैं, 11– सतह से उठते हुये, 12– तक्वियतुल ईमान आदि–आदि।

पत्रकारितः– पत्रकारिता में भी आपका बड़ा योगदान है। महान पत्रकार श्रृध्य कन्हैया लाल मिश्र प्रभाकर के साथ उनकी देख रेख में लगभग 25 साल तक विकास पाक्षिक के उपसम्पादक रहे भारत के दैनिक साप्ताहिक,पाक्षिक और मासिक हिन्दी उर्दू पत्रों में आपके लेख छपते हैं। आज भी आपकी लेखनी जिन्दा है। अनेक संस्थाओं ने आपके कार्य को देखकर आपको सम्मानित किया है।

वर्तमान पता– मदनी आई.टी.आई. मदनी रोड़ देवबन्द 247554